सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
You Tube
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 51, नई दिल्ली । शुक्रवार, 03 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

हमारी समस्याओं का समाधान तो केवल हमारे पास ही है दूसरों के पास तो केवल सुझाव है।

03 स्कूलों को धमकी मामले में दिल्ली पुलिस ने रूस की एजेंसी से किया संपर्क
06 गिरगिट के रंग, नेकी के संग
08 बार एसोसिएशन में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए रखें आरक्षित

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा : दुर्घटनाओं के असली कारण को समझना: लेन ड्राइविंग का महत्व

डॉ. अंकुर शरण

दुर्घटनाओं के लिए सड़कों को दोष देना एक आम बात है, लेकिन यह गलत आरोप है। इसके बजाय, हमें अनुशासित लेन ड्राइविंग के महत्व को समझना चाहिए। ओवरटेकिंग एक शॉर्टकट की तरह लग सकता है, जो कुछ किलोमीटर आगे बढ़ने का वादा करता है, लेकिन अक्सर इसकी कीमत चुकानी पड़ती है - हमारे जीवन के खिलाफ खतरे के मूल्य को मापना।

हाल ही की एक दुखद घटना इस वास्तविकता को उजागर करती है। अरावली क्षेत्र में फ़रीदाबाद-गुड़गांव रोड पर दो कारों के बीच आमने-सामने की टक्कर लापरवाही से गाड़ी चलाने के परिणामों की याद दिलाती है। टक्कर सिर्फ एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना नहीं थी; यह यातायात मानदंडों की अवहेलना और आवेगपूर्ण कार्यों पर सुरक्षा को प्राथमिकता देने में विफल रहने का परिणाम था।

चूँकि हम जान गंवाने पर शोक मनाते हैं और घायलों के लिए प्रार्थना करते हैं, इसलिए अपनी ड्राइविंग आदतों पर विचार करना अनिवार्य है। हर बार जब हम गाड़ी चलाते हैं, तो हम न केवल अपना जीवन बल्कि दूसरों का जीवन भी अपने हाथों में रखते हैं। आइए लेन ड्राइविंग का पालन करने, यातायात नियमों का सम्मान करने और बाकी सब से ऊपर सुरक्षा को प्राथमिकता देने की प्रतिज्ञा करें। तभी हम ऐसी दुखद घटनाओं को रोकने और सड़क पर सभी के लिए सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने की आशा कर सकते हैं।

पश्चिमी दिल्ली में लगा कई किलोमीटर लंबा जाम

सड़क पर रेंगते रहे वाहन; लोगों का गर्मी से हुआ बुरा हाल

परिवहन विशेष

उत्तम नगर से होते हुए जनकपुरी की ओर जाने वाले रास्ते पर सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा। वाहन चालकों को मिनटों का सफर तय करने में घंटों का समय लगा। तेज धूप के कारण वाहन चालकों के पसीने भी छूटते हुए दिखे। जनकपुरी से तिलक नगर टैगोर गार्डन और राजौरी गार्डन की तरफ जाने वाला रास्ते पर भी कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा

पश्चिमी दिल्ली। तपती गर्मी में उत्तम नगर, जनकपुरी से लेकर राजौरी गार्डन तक बृहस्पतिवार को सुबह ग्यारह बजे से कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा। साथ ही पंखा रोड पर भी वाहन रेंग-रेंगकर आगे बढ़ते हुए नजर आए। मिनटों का सफर करने में लोगों को घंटों लगे। साथ ही धूप में खड़े वाहन चालकों का गर्मी और जाम से बुरा हाल रहा।

वाहनों का दवाब अधिक होने से लोगों ने सर्विस लेन का सहारा लिया, जबकि कुछ वाहन चालक गलियों के जरिए अपने गंतव्य तक पहुंचे। हालांकि कुछ चौराहों पर पुरुष के अलावा महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी भी तैनात रहीं।

सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा

उत्तम नगर से होते हुए जनकपुरी की ओर जाने वाले रास्ते पर सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा। वाहन चालकों को मिनटों का सफर तय करने में घंटों का समय लगा। तेज धूप के कारण वाहन चालकों के पसीने भी छूटते हुए दिखे। जनकपुरी से तिलक नगर, टैगोर गार्डन और राजौरी गार्डन की तरफ जाने वाला रास्ते पर भी कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा, जिसकी वजह से वाहन चालकों को दिक्कत का सामना करना पड़ा।

पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू

इन रास्तों पर जाम लगा होने से वाहन चालकों ने सर्विस लेन का प्रयोग किया लेकिन वहां पर अवैध पार्किंग के वाहन खड़े होने से केवल छोटे वाहनों को ही रास्ता मिल पाया, जबकि कार या अन्य वाहन बीच में ही फंस रहे। जाम की वजह से दो पहिया वाहनों ने पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू कर दी।

महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं

कई वाहन चालक अपने बच्चों को स्कूल लेने के लिए जा रहे थे, उन्हें जाम के कारण घंटों सड़क पर धूप में ही खड़ा रहना पड़ा। वहीं उत्तम नगर के अलावा जनकपुरी के चौराहे पर महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं। वहीं ट्रैफिक पुलिस का कहना है कि हर चौराहों पर पुलिसकर्मी तैनात हैं जाम खुलवाया जा रहा है।

बारह बजे बच्चे की स्कूल से छुट्टी होती है उसे लेने के लिए जा रहा हूं लेकिन जाम के कारण पिछले एक घंटे से रास्ते में फंसा हुआ हूं। धूप में गर्मी के कारण बुरा हाल है। आम तौर पर स्कूल से घर जाने में केवल 10 मिनट लगते थे मुझे लेकिन अब एक घंटा हो चुका है। अभी भी स्कूल नहीं पहुंच पाया हूं।

– रमन, वाहन चालक

जाम के कारण उत्तम नगर से जनकपुरी आने में एक घंटा लग गया है। सड़कों पर इतना ट्रैफिक है तो उसके लिए प्लान क्यों नहीं तैयार किया जाता है। जनता धूप में परेशान हो रही है।

– वीरपाल भाटी, वाहन चालक

संस्कारशाला : बुजुर्गों का शाश्वत मूल्य: हमारे गुमनाम नायकों को एक श्रद्धांजलि : प्रियंका

परिवहन विशेष

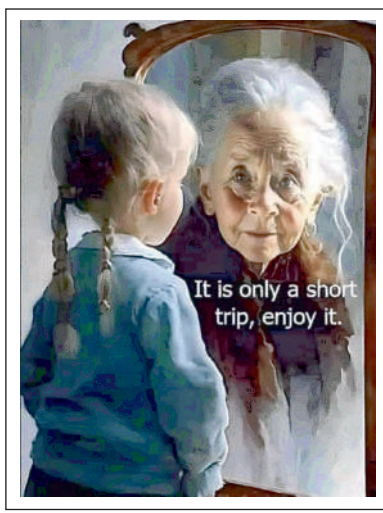

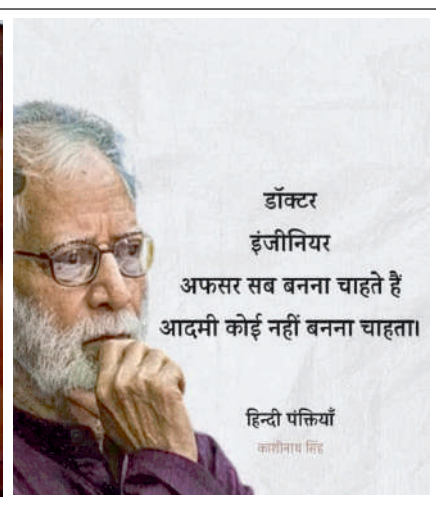

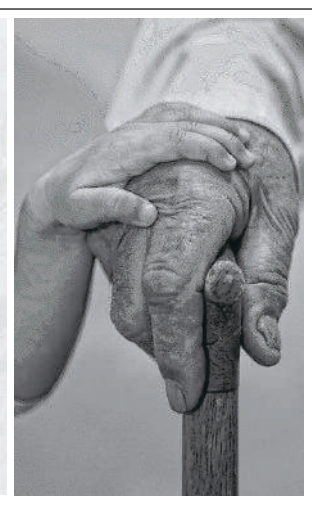

आधुनिक जीवन की भागदौड़ में, हमारे बुजुर्गों की शांत, स्थिर उपस्थिति को नजरअंदाज करना आसान है। फिर भी, वे हमारे समाज के स्तंभ, ज्ञान के संरक्षक और हमारे इतिहास के रखवाले हैं। जैसे-जैसे दुनिया आगे बढ़ रही है, रुकना और हमारे समुदायों को आकार देने और हमारे जीवन को समृद्ध बनाने में हमारे वरिष्ठ नागरिकों द्वारा निभाई गई अमूल्य भूमिका को पहचानना महत्वपूर्ण है।

एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जिसमें दादा-दादी का आरामदायक आलिंगन न हो, किसी बुजुर्ग की बुद्धिमान सलाह न हो, उन कहानियों के बिना जो हमारे परिवार की विरासत को बुनती हों। यह गहराई से रहित दुनिया होगी, जिसमें पिछली पीढ़ियों से मिलने वाली समृद्धि का अभाव होगा। हमारे बुजुर्ग ज्ञान के जीवंत भंडार हैं, उनके झुर्रीदार हाथों में प्राचीन काल के रहस्य छिपे हुए हैं। वे दशकों की जीत और कष्टों से सीखे गए सबक अपने साथ रखते हैं, जो हमें जीवन भर के अनुभव से प्राप्त अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

लेकिन उनका महत्व महज़ ज्ञान से कहीं आगे तक फैला हुआ है। हमारे बुजुर्ग वह गोंद हैं जो परिवारों को एक साथ बांधे रखते हैं, हमारे समुदायों की स्थिर धड़कन हैं। वे ही हैं जो परंपराओं को आगे बढ़ाते हैं, हमारे अंदर अपनेपन और पहचान की भावना पैदा करते हैं। पारिवारिक समारोहों में उनकी उपस्थिति, हॉल में गूंजती उनकी हँसी, हमें उस स्थायी बंधन की याद दिलाती है जो हमें पीढ़ियों से एक साथ बांधे हुए है।

फिर भी, उनके निर्विवाद महत्व के बावजूद, हमारे बुजुर्गों को अक्सर समाज में उपेक्षित और हाशिए पर रखा जाता है। हम एक ऐसी संस्कृति में रहते हैं जो युवाओं और नवीनता का महिमामंडन करती है, बुजुर्गों को हाशिए पर धकेल देती है। लेकिन ऐसा करने पर, हम खुद को उनके अपार योगदान से वंचित कर देते हैं और उनसे वह सम्मान और प्रतिष्ठा छीन लेते हैं जिसके वे हकदार हैं।

यह एक आदर्श बदलाव का समय है, जिस तरह से हम अपने बुजुर्गों को देखते हैं और उनके साथ व्यवहार करते हैं उसका पुनर्मूल्यांकन करते हैं। उन्हें अतीत के अवशेष के रूप में खारिज करने के बजाय, हमें उन्हें अमूल्य खजाने के रूप में अपनाना चाहिए। हमें उनकी कहानियाँ सुननी चाहिए, उनकी बुद्धिमत्ता का सम्मान करना चाहिए और उनके साथ बिताए हर पल को संजोना चाहिए।

क्योंकि, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में, हमारे बुजुर्ग हमें एक अनमोल उपहार प्रदान करते हैं: परिप्रेक्ष्य का उपहार। वे हमें याद दिलाते हैं कि जीवन में वास्तव में क्या मायने रखता है, हमें धीमा करने और उन क्षणों का आनंद लेने का आग्रह करते हैं जो अक्सर हमारी उंगलियों से फिसल जाते हैं। वे हमें विपरीत परिस्थितियों में लचीलेपन का महत्व सिखाते हैं, अक्सर उदासीनता से ग्रस्त दुनिया में करुणा का महत्व सिखाते हैं।

तो आइए हम अपने बड़ों के प्रति कृतज्ञता के ऋण को न भूलें। आइए हम न केवल शब्दों से, बल्कि कार्यों से भी उनका सम्मान करें - उनकी कहानियाँ सुनकर, उनकी सलाह लेकर, उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान के साथ व्यवहार करके जिसके वे हकदार हैं। ऐसा करके हम न केवल अतीत का सम्मान करते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल भविष्य भी सुनिश्चित करते हैं।

ग्रीन लाइन मेट्रो के थम गए पहिए, थोड़ी देर के लिए प्रभावित रहा परिचालन

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने शाम 610 बजे सोशल मीडिया पर पोस्ट कर ग्रीन लाइन पर कीर्ति नगर से इंद्रलोक और बहादुरगढ़ के बीच मेट्रो का परिचालन प्रभावित होने की सूचना दी। डीएमआरसी का कहना है कि एक मेट्रो के ओएचई (ओवर हेड इक्विपमेंट) में खराबी आ गई थी। मामला संज्ञान में आने के बाद इसे जल्दी ही ठीक करा लिया गया।

नई दिल्ली। ग्रीन लाइन पर तकनीकी कारण से बृहस्पतिवार शाम को पीक आवर में कुछ देर के लिए मेट्रो का परिचालन प्रभावित हुआ। इससे यात्रियों को सफर में परेशानी का सामना करना पड़ा। लेकिन थोड़ी ही देर में मेट्रो का परिचालन सामान्य हो गया।

दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने शाम 6:10 बजे इंटरनेट मीडिया पर पोस्ट कर ग्रीन लाइन पर कीर्ति नगर से इंद्रलोक और बहादुरगढ़ के बीच मेट्रो का परिचालन प्रभावित होने की सूचना दी। डीएमआरसी का कहना है कि एक मेट्रो के ओएचई (ओवर हेड इक्विपमेंट) में खराबी आ गई थी। इसे जल्दी ही ठीक करा लिया गया। इसलिए करीब 15 मिनट में परिचालन सामान्य हो गया।

रेलवे का पूरी तरह हो जाएगा कायाकल्प, चार तरह के विकल्पों में बदल जाएंगी समस्त ट्रेनें

वंदे भारत मेट्रो पर काम तेजी से चल रहा है। 50 ट्रेनें लगभग तैयार हैं। जुलाई में परीक्षण के लिए पहली ट्रेन आ भी जाएगी। इसके लिए देश भर के 124 रूटों की पहचान कर ली गई है। मेट्रो की तर्ज पर ही वंदे मेट्रो की भी गति अधिकतम 130 किमी प्रतिघंटा होगी। इसमें करीब 100 सीटें बैठने की होंगी और 200 लोग खड़े होकर यात्रा कर सकते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण अभियान के तहत पुराने संस्करण की ट्रेनें पीछे छूट जाएंगी और सारी की सारी नए स्वरूप में आ जाएंगी। पटरियों पर अब चार तरह की यात्री ट्रेनें दौड़ेंगी। छोटी दूरी के लिए वंदे भारत मेट्रो, मध्यम दूरी के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस एवं लंबी दूरी के लिए दो तरह की ट्रेनें चलाई जाएंगी- वंदे भारत स्लीपर और अमृत भारत एक्सप्रेस। वंदे भारत ट्रेनों को अगले पड़ाव पर ले जाने की तैयारी है। रेलवे अब इन्हीं चार संस्करणों में सारी ट्रेनें बनाने में जुटा है।

सारी ट्रेनों को बदल देने की है तैयारी

अगले सात-आठ वर्षों में सारी ट्रेनों को बदल देने की तैयारी है। वंदे भारत मेट्रो में कम से कम चार और अधिक से अधिक 16 बोगियां होंगी। यह उन बड़े शहरों के लिए चलाई जाएंगी, जिनके आसपास लगभग 100-200 किमी की दूरी पर कोई दूसरा शहर या उपनगर होगा। इसका फर्स्ट लुक सामने आ चुका है। छोटे शहरों से बड़े शहरों में नौकरी या कारोबार करने के लिए रोजाना आने-जाने वाले ट्रेन यात्रियों को इससे सुविधा होगी। जैसे पटना से गया, दिल्ली से मेरठ, आगरा से मथुरा, लखनऊ से कानपुर जैसे शहरों के बीच यह ट्रेन चलाई जाएगी। भीड़ और जरूरत को देखते हुए बोगियों की संख्या घटाई-बढ़ाई जा सकती है। किराया सामान्य ट्रेनों की तरह होगा, लेकिन सुविधाएं अत्याधुनिक होंगी।

वंदे भारत मेट्रो पर तेजी से चल रहा काम

वंदे भारत मेट्रो पर काम तेजी से चल रहा है। 50 ट्रेनें लगभग तैयार हैं। जुलाई में परीक्षण के लिए पहली ट्रेन आ भी जाएगी। इसके लिए देश भर के 124 रूटों की पहचान कर ली गई है। मेट्रो की तर्ज पर ही वंदे मेट्रो की भी गति अधिकतम 130 किमी प्रतिघंटा होगी। इसमें करीब 100 सीटें बैठने की होंगी और 200 लोग खड़े होकर यात्रा कर सकते हैं। 500 किमी से 800 किमी के बीच के दो शहरों में आने-जाने के लिए मध्यम दूरी की वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेनें चलाई जा रही हैं। इसकी अधिकतम गति 160 किमी प्रतिघंटा है, किंतु बढ़ाकर 200 किमी करना है। अभी ऐसी ट्रेनों की संख्या 75 है। इसे बढ़ाकर 400 करना है।

लंबी दूरी के लिए दो तरह की ट्रेनें हो रहीं डिजाइन

भारतीय रेलवे द्वारा लंबी दूरी के लिए दो तरह की ट्रेनें डिजाइन की जा रही हैं। वंदे भारत स्लीपर को लगभग 800 किमी से अधिक दूरी की यात्रा के लिए चलाया जाएगा। इसमें यात्री सोकर भी जा सकते हैं। दूसरी ट्रेन वंदे भारत साधारण होगी, जो बिना एसी की होगी। इन्हें उन रूटों पर चलाया जाना है, जहां वेटिंग की समस्या ज्यादा है और रोजाना बड़ी संख्या में यात्री बड़े शहरों के लिए प्रस्थान करते हैं। वंदे भारत एक्सप्रेस की अधिकतम गति अभी 183 किमी प्रतिघंटा पहुंचती है, लेकिन भविष्य में इसे और तेज करने पर काम चल रहा है। वंदे साधारण को अधिकतम 130 की गति से चलाने की तैयारी है। दोनों तरह की ट्रेनों में कम से कम 12 एवं अधिक से अधिक 16 बोगियां होंगी।

क्या बायोएनर्जी वास्तव मे हरित है ?

न्यू साउथ वेल्स के हंटर क्षेत्र में बायोएनर्जी का उपयोग करके एक पुराने कोयला आधारित बिजली स्टेशन को पुनर्जीवित करने की योजना पर विचार किया जा रहा है। स्टेशन के लिए इसी तरह की योजनाएँ पहले आगे नहीं बढ़ पाई थीं। जैसा कि हम डीकार्बोनाइजेशन से जूझ रहे हैं, बायोएनर्जी (काटे गए पेड़ों और अन्य पौधों से प्राप्त ऊर्जा) को अक्सर जीवाश्म ईंधन के पर्यावरण के अनुकूल विकल्प के रूप में पेश किया जाता है। लेकिन क्या यह पर्यावरण की दृष्टि से सही है? इस सवाल का परेशान करने वाला उत्तर हैः यह निर्भर करता है। पेड़ और अन्य पौधे वायुमंडल से कार्बन सोखते हैं और इसे बायोमास के रूप में संग्रहीत करते हैं। जब इन्हें बिजली उत्पादन के लिए जलाया जाता है तो वही कार्बन निकलता है। इससे पता चलता है कि बायोएनर्जी ₹कार्बन-तटस्थ₹ है। लेकिन ये इतना आसान नहीं है. कई चीजें बायोएनर्जी परियोजना की पर्यावरणीय साख को बदल सकती हैं। प्रत्येक परियोजना अद्वितीय है और उस पर स्वतंत्र रूप से विचार किया जाना चाहिए। आइए उन पांच प्रमुख प्रश्नों के बारे में बताएं जो हमें प्रत्येक बायोएनर्जी परियोजना के बारे में पूछना चाहिए।

1. बायोमास का स्रोत क्या है? हमारे ग्रह पर पौधों की आश्चर्यजनक श्रृंखला का मतलब है कि भारी मात्रा में बायोमास ₹कच्चा माल" उपलब्ध है। तो हमें क्या उपयोग करना चाहिए? सबसे पहले, हम देशी जंगलों को काटना नहीं चाहते। यहां तक कि देशी वानिकी के ₹अवशेषों₹ (पेड़ों की छाल और सिरे जैसे उप-उत्पाद जिनका सीधे उपयोग नहीं किया जा सकता) का उपयोग करना भी समस्याग्रस्त है। अवशेष बायोएनर्जी परियोजना की परवाह किए बिना बनाए जाते हैं, लेकिन एक पावर स्टेशन को देशी वानिकी उद्योग से जोड़ना और उस पर निर्भरता जारी रखना विवादास्पद है। कुछ देशों ने पहले ही मूल लॉगिंग की समाप्ति पर रोक लगा दी है।मल्ली जैसी तेजी से बढ़ने वाली बायोमास प्रजातियों को इसके बजाय उद्देश्य-विकसित ऊर्जा ₹फसलों₹ के रूप में काटा जा सकता है। यह एक आकर्षक विकल्प की तरह लग सकता है, लेकिन किसी भी उचित पैमाने पर ऊर्जा फसलों के लिए आवश्यक भूमि की विशाल मात्रा निषेधात्मक हो सकती है। कृषि अवशेष और ₹अपशिष्ट₹ बायोमास, जैसे कि लैंडफिल में भेजे जाने वाले कार्बनिक पदार्थ (उदाहरण के लिए, घरेलू डिब्बे), भी आसानी से उपलब्ध हैं। ऑस्ट्रेलियाई बायोएनर्जी रोडमैप राष्ट्रीय स्तर पर संभावित रूप से उपयोग योग्य अपशिष्ट बायोमास की बड़ी मात्रा को दर्शाता है। अधिकांश मामलों में अपशिष्ट बायोमास अन्यथा लैंडफिल में चला जाएगा, खुले मैदान में जला दिया जाएगा या उत्सर्जन नियंत्रण के बिना विघटित होने के लिए छोड़ दिया जाएगा। अपशिष्ट बायोमास के उपयोग के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हमारे अगले प्रश्न से आते हैं।

2. बायोमास एकत्र करने के लिए कितनी ऊर्जा की आवश्यकता होती है? बायोमास ऊर्जा सचमुच पेड़ों पर उगती है। लेकिन यह एक बड़े क्षेत्र में फैला हुआ है और इसके लिए केंद्रीय प्रसंस्करण सुविधा की आवश्यकता है। बायोमास को इकट्ठा करना, उसका प्रसंस्करण करना और जहां उसे जाना है वहां ले जाना, इस सब में ऊर्जा की आवश्यकता होती है। वर्तमान में, यह ज्यादातर जीवाश्म-ईंधन वाली ऊर्जा है, जिसमें डीजल ट्रक और चिपर भी शामिल हैं। बायोमास जितना अधिक फैला होगा, कटाई और संग्रहण के लिए उतनी ही अधिक ऊर्जा का उपयोग किया जाएगा। परिवहन और प्रसंस्करण आमतौर पर अधिकांश जैव-ऊर्जा-संबंधित उत्सर्जन के लिए जिम्मेदार होते हैं और बायोमास की आवश्यकता निरंतर बनी रहती है। इसे बिना किसी असफलता के हर दिन एकत्र किया जाना चाहिए और केंद्रीय सुविधा तक पहुंचाया जाना चाहिए। बिजली या हाइड्रोजन-ईंधन वाले ट्रकों सहित परिवहन का विद्युतीकरण, इस ऊर्जा उपयोग को संतुलित करने में मदद कर सकता है। हालाँकि, यह अभी भी एक महंगा विकल्प है और बायोएनर्जी परियोजनाओं में अक्सर इस पर विचार नहीं किया जाता है।

3. बायोएनर्जी परियोजना के बिना क्या होगा? यदि बायोमास का उपयोग जैव ऊर्जा के लिए नहीं किया जा रहा होता तो उसका क्या होता? यदि इसके स्थिर कार्बन रूप (जैसे कि एक पेड़) में बने रहने की उम्मीद है, तो इसे जलाना तुलनात्मक रूप से शुद्ध-सकारात्मक कार्बन रिलीज होगा। हालाँकि, यदि बायोमास उत्सर्जन में योगदान दे रहा है या आक्रामक खरपतवार जैसी स्थानीय पर्यावरणीय समस्याएं पैदा कर रहा है, तो बायोएनर्जी के लिए इसका उपयोग करना बेहतर पर्यावरणीय परिणाम हो सकता है। हंटर वैली परियोजना अपने इनपुट के हिस्से के लिए ग्रामीण संपत्तियों से साफ की गई लकड़ी के खरपतवार का उपयोग करने का प्रस्ताव करती है। उपयोग की गई भूमि के बारे में क्या? क्या हमें भूमि का उपयोग ऊर्जा (जैव ऊर्जा या अन्य) के उत्पादन के लिए करना चाहिए? या क्या इसका उपयोग आवास को बहाल करने के लिए किया जा सकता है? हमें ऊर्जा के लिए भूमि का उपयोग कम से कम करना होगा और यथासंभव कुशल बनना होगा। हमें पुनर्योजी रूप से सोचने और कमजोर जीवों और वनस्पतियों के लिए जंगली स्थानों को वापस उनके स्थान पर बनाए रखने की जरूरत है।

4. विकल्प क्या हैं? यदि हम बायोएनर्जी संयंत्र की तुलना कोयले से चलने वाले बिजली स्टेशन से करते हैं, तो बायोमास आमतौर पर बेहतर होता है। लेकिन ऑस्ट्रेलिया में कोयले से चलने वाली नई बिजली उपलब्ध नहीं है। भविष्य में बिजली उत्पादन के लिए सौर और पवन सच्चे प्रतिस्पर्धी हैं। ये ऊर्जा स्रोत आसानी से उपलब्ध हैं और इनसे जुड़ी लागत और उत्सर्जन बहुत कम है। सौर और पवन स्वाभाविक रूप से परिवर्तनशील हैं। बायोमास बिजली उत्पादन पारंपरिक कोयले से चलने वाली बिजली की तरह है, जो लगातार चलती रहती है। यह ऊर्जा ₹बेसलोड₹ उत्पन्न करने का एक अच्छा तरीका लग सकता है। हालाँकि, यह भविष्य के ग्रिड में विशेष रूप से उपयोगी नहीं हो सकता है जहाँ भिन्नता एक डिज़ाइन विशेषता है, दोष नहीं।बायोमास से हम बिजली के अलावा अन्य चीजें भी बना सकते हैं। स्थायी विमानन ईंधन, मेथनॉल, या हाइड्रोजन और बायोमेथेन जैसी गैसें इसके कुछ उदाहरण हैं। ये उत्पाद कठिन क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन की जगह ले सकते हैं।बायोचार, हवा के बिना बायोमास को गर्म करके बनाया गया चारकोल जैसा उत्पाद, भी उत्पादित किया जा सकता है। जब इसका उपयोग मिट्टी में सुधार के लिए किया जाता है, तो इसमें कार्बन सामग्री बढ़ाने सहित कई पर्यावरणीय लाभ होते हैं। फिर भी, उत्सर्जन को कम करने की रणनीति के रूप में बायोचार का उपयोग करने के सुझावों पर बहुत सावधानी से विचार किया जाना चाहिए। चूंकि बायोमास कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना है, जो जीवाश्म ईंधन के समान शुरुआती तत्व हैं, इसलिए अधिक उन्नत जैव-व्युत्पन्न उत्पादों को पेट्रोकेमिकल उत्पादों के विकल्प के रूप में भी बनाया जा सकता है।

5. परियोजना पर अन्य क्या प्रभाव होंगे? बायोएनर्जी फसलों की सिंचाई करने से जल तनाव पैदा हो सकता है। मिट्टी की गुणवत्ता और भूमि क्षरण पर भी विचार किया जाना चाहिए। और बायोमास के परिवहन और प्रसंस्करण से उसके कण जैसे अन्य उत्सर्जन पैदा हो सकते हैं जो परियोजना के आसपास के क्षेत्रों को प्रभावित करेंगे।वास्तविकता यह है कि आधुनिक मानव और हमारी प्रौद्योगिकियां पर्यावरण के लिए खराब हैं, बस। हर तकनीक का एक अलग असर होगा। तो सवाल यह है कि किस विकल्प का प्रभाव सबसे कम है? बायोएनर्जी को सही तरीके से प्राप्त करना एक चुनौती है। सर्वोत्तम बायोएनर्जी परियोजनाओं को उपयोगी उत्पाद बनाना चाहिए या जीवाश्म ईंधन का विकल्प पेश करना चाहिए। उन्हें नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन का पूरक होना चाहिए। उन्हें आसानी से उपलब्ध अपशिष्ट या बायोमास के स्रोतों का उपयोग करना चाहिए जो अन्यथा पर्यावरणीय समस्याओं का कारण बनेंगे। उन्हें बायोमास एकत्र करने और प्रसंस्करण के लिए ऊर्जा का उपयोग कम से कम (या विद्युतीकरण) करना चाहिए। हाँ, बायोएनेर्जी पर्यावरण की दृष्टि से सुदृढ़ हो सकती है। ये असंभव नहीं है। लेकिन इसे सही तरह से लेना हमेशा आसान नहीं होता है।

गर्मियों का स्वाद : आम का अचार बनाने की विधि

गर्मियों का मौसम आते ही बाजारों में हर तरफ आमों की भरमार हो जाती है। मीठे और स्वादिष्ट आम न सिर्फ खाने में स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि इनसे कई तरह के व्यंजन भी बनाए जा सकते हैं। इनमें से एक है आम का अचार। आम का अचार न सिर्फ खाने में स्वादिष्ट होता है, बल्कि यह पाचन के लिए भी अच्छा होता है। इसे बनाना भी बहुत आसान है। तो चलिए जानते हैं, घर पर स्वादिष्ट आम का आचार बनाने की विधिः

सामग्रीः कच्चे आम – 1 किलो (धोकर, छीलकर और छोटे टुकड़ों में काट लें), नमक – स्वादानुसार, लाल मिर्च पाउडर – 1 टेबलस्पून, पीली सरसों के दाने – 1 टेबलस्पून, मेथी दाना – 1/2 टेबलस्पून, राई – 1/2 टेबलस्पून, हींग – 1/4 छोटा चम्मच, हल्दी पाउडर – 1/2 छोटा चम्मच, सरसों का तेल – 1/2 कप

विधिः एक बर्तन में कटे हुए आम के टुकड़े, नमक और लाल मिर्च पाउडर डालकर अच्छी तरह मिला लें। इसे कम से कम 2-3 घंटे के लिए ढककर रख दें, ताकि आम से पानी निकल जाए। एक पैन में सरसों का तेल गरम करें। इसमें राई, मेथी दाना और हींग डालकर तड़का दें।

जब मसाले से खुशबू आने लगे, तो इसमें हल्दी पाउडर डालकर 10 सेकंड तक भूनें। अब इसमें आम के टुकड़े और नमक वाला पानी डालें। मिश्रण को उबाल आने दें, फिर आंच धीमी कर दें और 10-15 मिनट तक पकाएं, जब तक कि आम नरम न हो जाएं। आंच बंद करें और ठंडा होने दें। ठंडा होने के बाद, इस आचार को कांच के जार में भरकर फ्रिज में स्टोर करें। टिप्सः आप अपनी पसंद के अनुसार मसालों की मात्रा में कमी या ज्यादा कर सकते हैं। आप चाहें तो इसमें कड़ी पत्ते, लहसुन या अदरक भी डाल सकते हैं। आचार को ज्यादा दिनों तक रखने के लिए, जार को अच्छी तरह साफ करके सूखा लें। आचार को हमेशा सूखे चम्मच से निकालें। आशा है कि आपको यह आम का अचार बनाने की विधि पसंद आई होगी। इस स्वादिष्ट अचार का आनंद अपने परिवार और दोस्तों के साथ लें।

वैशाख माह में खोले जाते हैं केदारनाथ मंदिर के कपाट, जानिए इसके पीछे का कारण

क्या आप जानते हैं कि हर बार केदारनाथ के कपाट वैशाख महीने में ही क्यों खुलते हैं। ऐसे में अगर आप इस बात से अंजान हैं, तो हम आपको बताने जा रहे हैं कि केदारनाथ धाम के कपाट वैशाख माह में क्यों खुलते हैं।

आगामी 10 मई से केदारनाथ यात्रा शुरू होने वाली है। हर साल वैशाख माह में ही केदारनाथ यात्रा की शुरूआत होती है। वैशाख महीने में इस मंदिर के कपाट खोले जाते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हर बार केदारनाथ के कपाट वैशाख महीने में ही क्यों खुलते हैं। ऐसे में अगर आप इस बात से अंजान हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि केदारनाथ धाम के कपाट वैशाख माह में क्यों खुलते हैं और इसका क्या महत्व है।

केदारनाथ यात्राः हिंदू धर्म शास्त्रों के मुताबिक वैशाख महीने का काफी महत्व माना जाता है। असल में यह महीना हिंदू वर्ष का दूसरा महीना है। इस महीने में सभी देवी-देवताओं ने अवतरण लिया है।

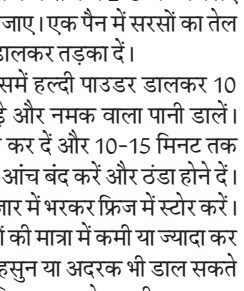

बता दें कि भगवान श्रीहरि विष्णु से लेकर भगवान शिव ने इसी महीने में कई अवतार लिए। बताया जाता है कि जब सृष्टि का जब सृजन नहीं हुआ था। तब भगवान श्रीहरि विष्णु-मां लक्ष्मी और भगवान शंकर-मां पार्वती की पूजा के लिए अन्य देवता वैकुंठ और कैलाश पर जाकर विधि-विधान से पूजा-अर्चना करते थे।

वहीं सृष्टि की रचना के बाद एक-एक घटना से एक-एक मंदिर का निर्माण होता चला गया। कहा जाता है कि तब भी प्राचीन काल में स्वर्ग से आकर देवी-देवता ही मंदिर के कपाट खोला करते थे और विधि-विधान से पूजा करते थे।

धार्मिक शास्त्रों में माना गया है कि जब भी मंदिर के कपाट खुलते हैं, तो उस दौरान मंदिर में दिव्य ऊर्जाएं मौजूद होती है। खासतौर पर वैशाख महीने में किसी भी भगवान के मंदिर के कपाट खुले, तो उस दौरान सभी देवी-देवता उपस्थित होकर अपनी कृपा बरसाते हैं।

इसी वजह से केदारनाथ के कपाट वैशाख महीने में खोलना शुभ माना जाता है। क्योंकि इस महीने में केदारनाथ धाम जाकर भगवान शिव-शंकर का आशीर्वाद मिलता है। वहीं श्रद्धालुओं को अन्य देवी-देवताओं की भी कृपा प्राप्त होती है।

आपके प्रेम जीवन और वैवाहिक जीवन के लिए कैसा रहेगा शुक्रवार का दिन

ज्योतिष शास्त्र में आपकी कुंडली में शुक्र की सकारात्मकता ही आपके प्रेम जीवन का भविष्य तय करती है। यदि किसी भी समय शुक्र आपकी कुंडली में सकारात्मक अवस्था में है, तो आपको रिश्तों में कम संघर्ष और प्रेम में अधिक अवसर दिखाई देंगे। प्रेम और वैवाहिक जीवन में जो जातक एक-दूसरे से प्रेम के बंधन में बंधे हुए हैं चंद्र राशि की गणना के आधार पर रोज होने वाली वार्ता के संबंध में भविष्यवाणी की जाती है। यहां दिया गया दैनिक लव राशिफल चंद्र राशि पर आधारित है। जानें प्रेम जीवन के लिहाज से कैसे गुजरेगा आपका दिन। यह दैनिक प्रेम राशिफल चंद्रमा की गणना पर आधारित है। जैसे दिन विशेष में प्रेमी-प्रेमिका के बीच दिन कैसा रहेगा, एक दूसरे के प्रति आपसी रिश्ता मजबूती की ओर बढ़ेगा या फिर किसी तरह की रुकावट आने वाली है इस सबके बारे में संकेत मिल जाता है। वहीं जो जातक वैवाहिक जीवन में है उनके लिए दिन कैसा रहने वाला होगा, जीवनसाथी के प्रति संबंध पहले से मजबूत होगा या किसी तरह का मनमुटाव तो नहीं होगा आदि के संकेत मिल जाते हैं। तो आइए दैनिक लव राशिफल के माध्यम से जानते हैं सभी 12 राशि के जातकों के लिए कैसा बीतेगा पूरा दिन...

मेष लव राशिफल (Aries Love Horoscope): मेष राशि के जातकों के लिए आज अपने लव पार्टनर संग अच्छा समय व्यतीत करेंगे। किसी योजना पर काम आगे बढ़ सकता है। अपने प्रियतम पर पूरा भरोसा रखें। आज अपनी भावनाओं को समझें और आत्म-विश्लेषण करें।

वृष लव राशिफल (Taurus Love Horoscope): वृषभ राशि के प्रेमी जातकों के लिए दिन काफी अच्छा रहने वाला होगा। रिश्तों को नया आयाम देने के लिए रोमांच और रोमांस दोनों का ही मिश्रण रहेगा। अपने प्रियतम के प्रति आपको सभी जिम्मेदारियों को पूरा करें तभी आप अपने जीवन में भी संतोष का महसूस करेंगे।

मिथुन लव राशिफल (Gemini Love Horoscope): मिथुन राशि के प्रेमी जातकों के लिए दिन कुछ खास नहीं रहेगा। थोड़ी उदासी और मन परेशान रहेगा। साथी संग किसी मुद्दे को लेकर विवाद हो सकता है। अपने दिलबर के लिए अपने मन में कोई भी नकारात्मक विचार न लाएं।

कर्क लव राशिफल (Cancer Love Horoscope): कर्क राशि के प्रेमी जातकों के मन में आज कुछ उधेड़बुन रहेगा। रिश्तों को लेकर मन में विचार अच्छे नहीं आएंगे। शादीशुदा जीवन जीने वाले जातकों की बात करें तो आज आपके घर कोई महिला मित्र आने से जीवनसाथी के मन में कुछ प्रश्न खड़े हो सकते हैं।

सिंह लव राशिफल (Leo Love Horoscope): सिंह राशि के प्रेमी जातकों को आज मन में चल रही किसी शंका का निवारण होगा। दोनों के बीच रोमांस फिर से पैदा हो सकता है। जीवनसाथी के साथ किसी पुरानी बात को लेकर चर्चा कर सकते हैं।

कन्या लव राशिफल (Virgo Love Horoscope): अगर प्रेममय जीवन में समस्या है और आप उसे हल नहीं कर पा रहे हैं तो शांत रहें और आपने पार्टनर को इसे सुलझाने दें। आपके कौशल और दक्षता के बारे सब जानते है।

तुला लव राशिफल (Libra Love Horoscope): आज आप अपने पार्टनर से अपने दिल की इच्छाओं को व्यक्त करें जिससे आप दोनों भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस करेंगे।

वृश्चिक लव राशिफल (Scorpio Love Horoscope): लव लाइफ में आपको सफलता मिलेगी और अपने प्रिय के साथ आज आप प्यार भरे पल बिताएंगे। जो लोग शादीशुदा हैं उनके दांपत्य जीवन में प्रेम बरसेगा।

धनु लव राशिफल (Sagittarius Love Horoscope): दांपत्य जीवन में आज खुशी के पल आएंगे। अगर आप किसी से प्यार करते हैं तो दिल की बात कहने में आज सफल होंगे।

मकर लव राशिफल (Capricorn Love Horoscope): अपनी लव लाइफ के कारण आप अपना कार्य बाधित कर सकते हैं। इससे भविष्य में आने वाली प्लानिंग रुक सकती है।

कुंभ लव राशिफल (Aquarius Love Horoscope): प्रेम संबंध के लिए भी आज का दिन काफी सुकून भरा रहेगा। साथी के साथ आज खुशी के पल बिताएंगे। इससे आज आपका मन प्रसन्न रहेगा।

मीन लव राशिफल (Pisces Love Horoscope): दाम्पत्य जीवन में कुछ समस्या आ सकती है। इसका कारण आपका व्यवहार हो सकता है। मीन राशि के प्रेमी जातकों के लिए अगर आज के दिन के बारे में बात करें तो आप एक दूसरे को बेहतर ढ़ंग से समझने का मौका मिलेगा।

पर्यावरण पाठशाला : बंदरों की शैतानी और उनका हमारे जीवन में महत्व : अंकुर

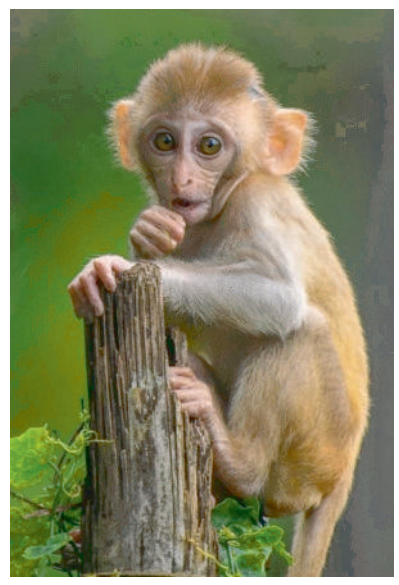

कुछ प्राणी बंदरों के समान आश्चर्य और आकर्षण की भावना उत्पन्न करते हैं। ये बुद्धिमान, सामाजिक प्राणी न केवल विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों के आवश्यक घटक हैं बल्कि हमारी अपनी विकासवादी यात्रा का दर्पण भी हैं। अमेज़न के हरे-भरे वर्षावनों से लेकर एशिया के प्राचीन मंदिरों तक, बंदर अपने पर्यावरण को आकार देने और प्रकृति के नाजुक संतुलन में योगदान देने में विविध भूमिकाएँ निभाते हैं।

बंदरों का महत्वः

1. जैव विविधता संरक्षकः बंदर कई आवासों में प्रमुख प्रजाति हैं, जो बीज फैलाव, वन पुनर्जनन और कीड़ों की आबादी को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फल खाकर और बीज फैलाकर, वे पादप समुदायों के स्वास्थ्य और विविधता को बनाए रखने में मदद करते हैं, जिससे अनगिनत अन्य प्रजातियों का अस्तित्व सुनिश्चित होता है।

2. सांस्कृतिक महत्वः विभिन्न संस्कृतियों और परंपराओं में, बंदरों को ज्ञान, शरारत और यहां तक कि दिव्य प्राणियों के प्रतीक के रूप में सम्मानित किया गया है। हिंदू पौराणिक कथाओं में पूजनीय हनुमान से लेकर चीनी लोककथाओं में चंचल बंदर राजा तक, इन प्राणियों ने मानव कल्पना और आध्यात्मिकता पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

3. वैज्ञानिक अंतर्दृष्टिः बंदरों का अध्ययन प्राइमेट व्यवहार, अनुभूति और सामाजिक गतिशीलता में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। बंदरों पर शोध से मनोविज्ञान और तंत्रिका विज्ञान से लेकर चिकित्सा और आनुवंशिकी तक के क्षेत्रों में सफलता मिली है, जिससे हमें अपनी विकासवादी उत्पत्ति और जैविक प्रक्रियाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली है।

बंदरों को सहारा देने के तरीकेः

1. संरक्षण प्रयासः बंदरों की आबादी को संरक्षित करने के लिए प्राकृतिक आवासों की रक्षा करना और वन्यजीव अभ्यारण्य स्थापित करना महत्वपूर्ण है। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) और इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर (आईयूसीएन) जैसे संरक्षण के लिए समर्पित संगठनों और पहलों का समर्थन करना, इन कमजोर प्राणियों की सुरक्षा में महत्वपूर्ण अंतर ला सकता है।

2. टिकाऊ प्रथाएँः कृषि, लॉगिंग और पर्यटन में टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने से निवास स्थान के विनाश को कम करने और मानव-वन्यजीव संघर्ष को कम करने में मदद मिल सकती है। जिम्मेदार इको-पर्यटन को बढ़ावा देने और बंदरों के साथ सह-अस्तित्व रखने वाले स्थानीय समुदायों का समर्थन करके, हम जीत-जीत समाधान बना सकते हैं जो लोगों और वन्यजीवन दोनों को लाभ पहुंचाते हैं।

3. शिक्षा और जागरूकताः सार्वजनिक समर्थन हासिल करने और संरक्षण की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बंदरों के महत्व और उनके सामने आने वाले खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है। शैक्षिक कार्यक्रमों, वृत्तचित्रों और सोशल मीडिया अभियानों के माध्यम से, हम व्यक्तियों को कार्रवाई करने और प्राकृतिक दुनिया के प्रबंधक बनने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

बंदर न केवल आकर्षक प्राणी हैं बल्कि हमारे वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र के अपरिहार्य सदस्य भी हैं। उनके महत्व को पहचानकर और उनकी सुरक्षा और समर्थन के लिए सक्रिय कदम उठाकर, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि ये करिश्माई प्राइमेट आने वाली पीढ़ियों तक फलते-फूलते रहें। आइए हम बंदरों के सार को अपनाएं और अपने ग्रह पर जीवन की समृद्ध विरासत को संरक्षित करने के लिए मिलकर काम करें।

indiangreenbuddy@gmail.com

काल सर्प दोष क्या है पूजा, निवारण, एवं शांति कैसे करे

ज्योतिष शास्त्र कहता है कुंडली में राहु और केतु द्वारा निर्मित बुरे प्रभाव को कालसर्प दोष कहा जाता है. यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में राहु और केतु के बीच में ग्रह आ जाते हैं तो इस दोष को ही कालसर्प दोष कहा जाता और सर्प को केतु का अधिदेवता कहा जाता है सर्प का अर्थ सांप होता है ज्योतिष शास्त्र में राहु को सांप का मुख और केतु को सांप की पूंछ माना गया है, किंतु इसका निवारण किया जा सकता है बहुत धन से पूजा हो ये आवश्यकता नही होती स्वयं से भगवान भोलेनाथ कृपा से इसका निवारण किया जा सकता है. जिस व्यक्ति की कुंडली में काल सर्प दोष होते हैं

1. इस व्यक्ति को अक्सर सपने में मृत लोग दिखाई देते हैं।

2. जीवन में संघर्ष करना पड़ता है एवं उसे अकेलापन महसूस होता है।

3. कारोबार पर काफी नकारात्मक असर होना हानी का सामना करना पड़ता है।

4. इसके अलावा नींद में शरीर पर सांप को रेंगते देखना, सांप को खुद को डसते देखना।

5. बात-बात पर जीवनसाथी से वाद विवाद होना। विवाह जीवन ग्रस्त रहना।

6. काल सर्प दोष के कारण व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से परेशान होता है।

कालसर्प दोष शान्ति के लिए अन्य उपाय

(1) कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से राहु-केतु आदि ग्रह शान्ति, सर्प दोष, पितृ दोष शान्ति, नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए एवं विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप करना शुभ होगा।

(2) कालसर्प की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख ॐ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का सर्प युगल, नाग स्तोत्र एवं नाग पूजादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

3) नाग-गायत्री मंत्र की कम से कम एक या तीन माला जप प्रतिदिन करना शुभ होगा -

नाग गायत्री मन्त्र - ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात ॥

(4) श्रावण मास में श्री महामृत्युञ्जय मंत्र का सवा लाख जप करवा कर दशांश संख्या का हवन करवाना शुभ होगा !

(5) प्रत्येक शनिवार को एक सूखे नारियल पर सरसों तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर ॐ भ्रां श्रीं भ्रौं सः जाप करे एवं अर्पण करे।

तेलंगाना कांग्रेस मुख्यालय पहुंची दिल्ली पुलिस, पूछताछ के लिए नहीं पहुंचे थे मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी

परिवहन विशेष न्यूज

स्पेशल सेल की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस (आइएफएसओ) ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी समेत तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश सचिव शिवा शंकर पार्टी प्रवक्ता अस्मा तस्लीम इंटरनेट मीडिया प्रभारी माने सतीश व इंटरनेट मीडिया संयोजक नवीन को 28 अप्रैल को नोटिस भेजकर उन्हें एक मई की सुबह 10 .30 बजे आइएफएसओ के द्वारका स्थित मुख्यालय में उपस्थित होने को कहा था।

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के फेक वीडियो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित होने के मामले में दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की आइएफएसओ की टीम जांच करने तेलंगाना कांग्रेस मुख्यालय पहुंची। लेकिन वहां उन्हें कोई नहीं मिला।

स्पेशल सेल की इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस (आइएफएसओ) ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी समेत तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश सचिव शिवा शंकर, पार्टी प्रवक्ता अस्मा तस्लीम, इंटरनेट मीडिया प्रभारी माने सतीश व इंटरनेट मीडिया संयोजक नवीन को 28 अप्रैल को नोटिस भेजकर उन्हें एक मई की सुबह 10.30 बजे आइएफएसओ के द्वारका स्थित मुख्यालय में उपस्थित होने को कहा था।

सभी को अपना गैजेट भी लाने को कहा गया

सभी को अपना-अपना इलेक्ट्रॉनिक गजट जैसे मोबाइल अथवा लैपटॉप लेकर आने को कहा गया था, जिसके जरिये उन्होंने एक्स पर फेक वीडियो पोस्ट किया था। लेकिन बुधवार को जांच में शामिल होने कोई भी दिल्ली नहीं आए।

नोटिस के जवाब में मुख्यमंत्री समेत पार्टी से जुड़े चार अन्य सदस्यों ने पुलिस को पत्र भेजकर जांच में शामिल होने के लिए 15 दिनों की मोहलत मांगी लेकिन पुलिस में कोई मोहलत नहीं दी है। दिल्ली नहीं आने पर पुलिस मुख्यमंत्री को छोड़कर अन्य चारों सदस्यों से पूछताछ करने तेलंगाना पहुंची।

दिल्ली पुलिस ने भेजा था नोटिस

फेक वीडियो मामले में पुलिस अब तक आठ राज्यों के 16 लोगों को पूछताछ में शामिल होने के लिए नोटिस भेज चुकी है। 29 अप्रैल को आईएसएसओ ने तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी समेत तेलंगाना कांग्रेस के प्रदेश सचिव शिवा शंकर, पार्टी प्रवक्ता अस्मा तस्लीम, इंटरनेट मीडिया प्रभारी माने सतीश व इंटरनेट मीडिया कन्वेनर नवीन को पूछताछ में शामिल होने के लिए नोटिस दिया था। मुख्यमंत्री को हैदराबाद स्थित उनके कर्मचारी व चार अन्य को व्यक्तिगत तौर पर नोटिस सौंपा था।

वायरल वीडियो में आरक्षण के खिलाफ थी बयानबाजी

तीसरे चरण के चुनाव के पहले फेक वीडियो के माध्यम से भाजपा को एससी, एसटी और ओबीसी आरक्षण का विरोधी साबित करने की कोशिश की गई। फेक वीडियो में शाह को आरक्षण को असंवैधानिक बताते हुए उसे खत्म करने का ऐलान करते हुए दिखाया गया था। जबकि असली वीडियो में शाह एसटी, एससी और ओबीसी आरक्षण को बनाए रखने की बात कहते हैं।

इंटरनेट मीडिया पर शाह के फेक वीडियो प्रसारित होने का संज्ञान में आने के बाद गृह मंत्रालय ने 28 अप्रैल को आइएफएसओ को फेक वीडियो मामले में शिकायत दी थी जिसके बाद पुलिस तुरंत कार्रवाई में जुट गई।

करोल बाग से महिला ने 36 लाख के हीरे चुराकर हो गई थी फरार, पुलिस ने गुजरात से धर दबोचा

करोल बाग से 36 लाख के हीरे चोरी कर फरार चल रही महिला को गुजरात से गिरफ्तार कर लिया गया है। इसके साथ ही महिला के पास से लगभग 36 लाख रुपये मूल्य का 598 कैरेट वजनी हीरे का सामान बरामद कर लिया है। पूछताछ में आरोपित ने हीरे की चोरी में अपनी संलिप्ता कबूल कर ली। घटना 12 मार्च की है।

नई दिल्ली। मध्य दिल्ली के करोल बाग थाने की पुलिस टीम ने करोल बाग से 36 रुपये लाख के हीरे चोरी कर फरार हुई महिला को गुजराज से गिरफ्तार कर लिया। इसके साथ ही महिला के पास से लगभग 36 लाख रुपये मूल्य का 598 कैरेट वजनी हीरे का सामान बरामद कर लिया है। मध्य जिले के डीसीपी एम हर्षवर्धन ने बताया कि 12 मार्च को करोलबाग थाना इलाके में चोरी का मामला दर्ज किया गया था। जिसमें शिकायतकर्ता ने कहा था कि जब वह करोलबाग गुरुद्वारा से करोल बाग मेट्रो स्टेशन के लिए रिक्शा से जा रहा था,तो किसी ने उसका हीरे से भरा बैग चोरी कर लिया।

सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का विश्लेषण

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। जांच के दौरान के दौरान घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का विश्लेषण किया गया। साथ ही स्थानीय मुखबिरों को भी क्षेत्र में सक्रिय किया गया। आगे की जांच करने पर शिकायतकर्ता की सहयात्री महिला की पहचान भीलवास पलिताना भावनगर, गुजरात की रहने वाले ज्योति के रूप में हुई। इसके बाद एसआई साहिल, हवलदार मनोज, सिपाही राजेश, खुशाल और महिला सिपाही तनीस्का की टीम को गुजरात भेजा गया। आरोपित महिला इस दौरान लगातार अपने रहने का स्थान बदल रही थी। अंत में आरोपित ज्योति को पलिताना भावनगर, गुजरात से गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में आरोपित ने हीरे की चोरी में अपनी संलिप्ता कबूल कर ली और उसके आवास से 598 कैरेट वजन की हीरे की वस्तुएं बरामद कर ली गई। आगे की पूछताछ में महिला ने बताया कि उसने सह-अभियुक्त रोशन उर्फ पावला और एक महिला पिंकी, जिसे रोशन लाया था, के साथ गहनों की चोरी की। दोनो की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं।

'डॉक्टरों को कभी भी किसी लालच और दबाव में नहीं आना चाहिए', एम्स में बोले CJI डीवाई चंद्रचूड़

सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ गुरुवार को एम्स पहुंचे। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में एम्स जैसा इंस्टीट्यूट दूसरा नहीं है। यहां पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र को जीवन में सफलता जरूर मिलती है। जब कोई छात्र मेडिकल की पढ़ाई करता है तो उसको काफी मेहनत करनी पड़ती है। इसके बाद वह एक अच्छा डॉक्टर बनता है।

दक्षिणी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ ने कहा कि डॉक्टरों को बिना किसी के दबाव में आकर मरीजों के उपचार पर ध्यान देना चाहिए। डॉक्टर ही भगवान का दूसरा रूप होते है। वह एम्स स्थित जेएलएन आडिटोरियम के सभागार में आरडीएसीओएन कार्यक्रम में बोल रहे थे।

एम्स स्थित जेएलएन ऑडिटोरियम के सभागार में आरडीएसीओएन कार्यक्रम का सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डॉक्टर धनंजय यशवंत चंद्रचूड़ ने दीप प्रज्जवलित कर किया। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया में एम्स जैसा इंस्टीट्यूट दूसरा नहीं है। यहां पढ़ने वाले प्रत्येक छात्र को जीवन में सफलता जरूर मिलती है। जब कोई छात्र मेडिकल की पढ़ाई करता है तो उसको काफी मेहनत करनी पड़ती है। इसके बाद वह एक अच्छा डॉक्टर बनता है।

लालच व दबाव में नहीं आना चाहिए: चंद्रचूड़

उन्होंने कहा कि डॉक्टरों को कभी भी किसी लालच व दबाव में नहीं आना चाहिए, क्योंकि डॉक्टर पर मरीजों को बचाने की जिम्मेदारी होती है। डॉक्टर यदि लालच व दबाव में आ जाएगा तो वह मरीजों की जान नहीं बचा सकता। एम्स के डॉक्टर अच्छा कार्य करते है और एम्स में आने वाले मरीजों को डाक्टर से काफी उम्मीद रहती है। यहां के डाक्टर मरीजों के प्रति काफी गंभीर रहते है।

एम्स से अच्छा डॉक्टर कहीं नहीं: चंद्रचूड़

मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि एम्स से अच्छा डॉक्टर कहीं नहीं है। जब किसी मरीज को गंभीर बीमारी होती है तो उसका उपचार करने के लिए डॉक्टर को कठिन निर्णय लेना पड़ता है। एम्स में सबसे पहले वह अपने स्वजन का उपचार कराने के लिए आए थे और उसके बाद यहां घूमने के लिए आते थे। एम्स में आकर काफी अच्छा लगता है। इस मौके पर डायरेक्टर डॉक्टर एम श्रीनिवास, डॉक्टर विनय, डॉक्टर रीमा आदि मौजूद रहे।

स्कूलों को धमकी मामले में दिल्ली पुलिस ने रूस की एजेंसी से किया संपर्क

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली पुलिस ने बताया कि रूस की निजी ईमेल सेवा प्रदाता कंपनी मेल डाट आरयू (Mail.ru) रूसी कंपनी वीके द्वारा प्रदान की जाने वाली ईमेल सेवा है। साथ ही उसका डोमेन (.ru)भी इसी कंपनी का है। बुधवार को राजधानी के स्कूलों में ईमेल भेज बम से उड़ाने की धमकी देने वाले संदिग्ध ने इस ई सेवा प्रदाता के साथ पंजीकरण करने के बाद ईमेल आईडी savariimmail.ruबनाई।

नई दिल्ली। दिल्ली के स्कूलों में बम की धमकी देने वाले आरोपित तक पहुंचने के लिए दिल्ली पुलिस ने रूस की एजेंसी से संपर्क किया है। दिल्ली पुलिस ने इंटरपोल के जरिये मेल भेजने वाले का नाम, पता, संपर्क विवरण, वैकल्पिक ईमेल आइडी और संपूर्ण आइडी लोग व आइपी एड्रेस की रूस की एजेंसी राष्ट्रीय केंद्रीय ब्यूरो (एनसीबी) से जानकारी मांगी है।

बृहस्पतिवार को मामले को लेकर दिल्ली पुलिस में कई स्तर पर बैठकों का दौर चला। सूत्रों के अनुसार अभी तक दिल्ली पुलिस को ईमेल भेजने वाले के बारे में कोई ठोस व सटीक जानकारी नहीं मिल पाई है।

रूसी कंपनी वीके द्वारा प्रदान की जाने वाली ईमेल सेवा

दिल्ली पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारियों ने बताया कि रूस की निजी ईमेल सेवा प्रदाता कंपनी मेल डाट आरयू (Mail.ru) रूसी कंपनी वीके द्वारा प्रदान की जाने वाली ईमेल सेवा है। साथ ही उसका डोमेन (.ru)भी इसी कंपनी का है। बुधवार को राजधानी के स्कूलों में ईमेल भेज बम से उड़ाने की धमकी देने वाले संदिग्ध ने इस ई सेवा प्रदाता के साथ पंजीकरण करने के बाद ईमेल आईडी "savariim@mail.ru"बनाई।

इस कंपनी द्वारा मेल बनाने वाले और उसके आईवी पते आदि की पहचान छिपाने के लिए एक वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) का उपयोग किया गया। ऐसे में पुलिस ने रूस की एजेंसी से संपर्क करने के साथ ही निजी ई-मेल सेवा प्रदाता (.ru)से भी संदिग्ध की जानकारी मांगी है।

मेल आइडी बनाने के लिए पहले कराना पड़ता है पंजीकरण

दिल्ली पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि (.ru)पर मेल आइडी बनाने के लिए पहले पंजीकरण करना पड़ता है। पंजीकरण में मेल भेजने वाले संदिग्ध ने अपने विषय में जानकारी दी होगी। इसके बाद ही ईमेल आइडी बनी है। ऐसे में जिस ई-मेल से स्कूलों को धमकी के ई-मेल भेजे गए हैं उसे बनाने वाले के बारे में नाम, पता, संपर्क विवरण, वैकल्पिक ईमेल आइडी और संपूर्ण आइडी लाग मांगा गया है। दिल्ली पुलिस फिलहाल रूसी एजेंसी और कंपनी की तरफ से किसी भी तरह की जानकारी दिए जाने का इंतजार कर रही है।

वर्ष 2023 में भी भेजा गया था स्कूल को धमकी भरा ईमेल

एक अधिकारी ने कहा कि पुलिस ने जांच के दौरान पाया है कि दक्षिणी दिल्ली के एक स्कूल को भी 2023 में एक फर्जी धमकी भरा ईमेल मिला था। जहां भेजने वाले ने इसी मेल सेवा mail.ru का इस्तेमाल किया था। उन्होंने कहा, वह मामला अभी तक अनसुलझा है।

इन धाराओं में दर्ज की गई एफआईआर

दिल्ली पुलिस स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस (सीआई) टीम द्वारा इस मामले में आईपीसी की धारा 505 (2) (वर्गों के बीच शत्रुता, नफरत या द्वेष पैदा करने या बढ़ावा देने वाले बयान), 507 (गुमनाम संचार द्वारा आपराधिक धमकी), और 120 (बी) (आपराधिक साजिश की सजा) और एक के तहत एफआइआर दर्ज की गई है।

अधिकारी ने कहा, सीआई की समर्पित टीम इस पर काम कर रही है। जांच अधिकारी मामले को सुलझाने के लिए इंटेलिजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रैटेजिक आपरेशंस (आइएफएसओ) और भारतीय साइबर क्राइम कोआर्डिनेशन सेंटर सहित अन्य एजेंसियों की भी मदद ले रहे हैं।

दिल्ली में दंगा भड़काने के लिए प्रबीर पुरकायस्थ ने चीन से भारत में भेजा था धन, आरोप पत्र दाखिल

परिवहन विशेष न्यूज

न्यूजक्लिक मामले में जेल में बंद न्यूजक्लिक के संस्थापक प्रबीर पुरकायस्थ पर दिल्ली पुलिस ने गंभीर आरोप लगाया है। आरोप पत्र में न्यूजक्लिक के एचआर प्रमुख और आरोपित से सरकारी गवाह बने अमित चक्रवर्ती के बयान का हवाला दिया गया है। इसमें दावा किया गया है कि पुरकायस्थ सीतलवाड़ के कई कर्मचारियों को वेतन देते थे क्योंकि तीस्ता का एफसीआरए कुछ मुकदमेबाजी के कारण बंद हो गया था।

नई दिल्ली। न्यूजक्लिक मामले में न्यायिक हिरासत में जेल में बंद न्यूजक्लिक के संस्थापक और प्रधान संपादक प्रबीर पुरकायस्थ पर दिल्ली पुलिस ने गंभीर आरोप लगाया है। मामले में पटियाला हाउस कोर्ट में आरोप पत्र दाखिल कर पुलिस ने कहा कि वर्ष 2020 के दिल्ली दंगों व किसान आंदोलन को भड़काने से लेकर कोविड महामारी पर दुष्प्रचार अभियान चलाने के लिए चीन से भारत में फंडिंग की थी। पुलिस ने अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश हरदीप कौर के समक्ष दायर अपने आरोप पत्र में आरोप लगाया है कि पुरकायस्थ कार्यकर्ता तीस्ता सीतलवाड़ के कई कर्मचारियों को वेतन देती थीं। पुलिस ने कहा कि वर्तमान मामले में एक अन्य कार्यकर्ता गौतम नवलखा की भूमिका की जांच की जा रही है।

नवलखा न्यूजक्लिक के शेयरधारक रहे

अंतिम रिपोर्ट में आरोप लगाया गया कि नवलखा न्यूजक्लिक के शेयरधारक रहे हैं और संरक्षित गवाहों की गवाही में उनकी भूमिका प्रतिबंधित नक्सली संगठन के लिए हथियारों और गोला-बारूद के वित्त और आपूर्ति के माध्यमों में से एक के रूप में भी सामने आई है।

सरकारी गवाह बने अमित चक्रवर्ती के बयान का हवाला

आरोप पत्र में न्यूजक्लिक के मानव संसाधन (एचआर) प्रमुख और आरोपित से सरकारी गवाह बने अमित चक्रवर्ती के बयान का हवाला दिया गया है। इसमें दावा किया गया है कि

अमित चक्रवर्ती ने बयान में कहा गया है कि तीस्ता को इस निर्देश के साथ वित्त पोषित किया गया था कि वह अपने एनजीओ सबरंग, अपने पति और अन्य के माध्यम से समाज में सांप्रदायिक एजेंडा और वैमनस्य फैलाने के लिए पैसा खर्च करेगी। उनके पति, बेटी, बेटे और अन्य स्टाफ सदस्यों को भुगतान किया गया था।

पुरकायस्थ सीतलवाड़ के कई कर्मचारियों को वेतन देते थे, क्योंकि तीस्ता का एफसीआरए कुछ मुकदमेबाजी के कारण बंद हो गया था।

अमित चक्रवर्ती ने बयान में कहा गया है कि तीस्ता को इस निर्देश के साथ वित्त पोषित किया गया था कि वह अपने एनजीओ सबरंग, अपने पति और अन्य के माध्यम से समाज में सांप्रदायिक एजेंडा और वैमनस्य फैलाने के लिए पैसा खर्च करेगी। उनके पति, बेटी, बेटे और अन्य स्टाफ सदस्यों को भुगतान किया गया था। बयान में दावा किया गया है कि पुरकायस्थ को श्रीलंकाई मूल के अमेरिकी अमेरिकी नागरिक नेविल रॉय सिंघम के स्वामित्व वाली विभिन्न कंपनियों से अवैध धन प्राप्त होता था।

पुरकायस्थ ने एक व्यक्ति को 36 लाख रुपये दिए

इसमें आरोप लगाया गया कि सिंघम से प्राप्त धन में से पुरकायस्थ ने एक व्यक्ति को 36 लाख रुपये दिए और इसे वर्ष 2020 के दिल्ली दंगों को भड़काने के लिए शरजील इमाम को देने का निर्देश दिया गया था। आरोप पत्र में कहा गया कि इसी बीच कोरोना महामारी फैल गई और सिंघम ने पुरकायस्थ को लेख लिखकर एक अभियान शुरू करने का निर्देश दिया ताकि लोग भारतीय वैक्सीन लेने से बचें। इसके परिणामस्वरूप कई लोग मरेंगे, सरकार के खिलाफ असंतोष बढ़ेगा और गृह युद्ध की स्थिति पैदा हो सकती है।

अदालत में आरोप पत्र पर गत मंगलवार को संज्ञान लिया था और आरोप तय करने के लिए जिरह के लिए मामले को 31 मई को सूचीबद्ध किया था। पुरकायस्थ को पुलिस ने तीन अक्टूबर 2023 को गिरफ्तार किया था।

जेईई में सफलता के लिए जरूरी है पढ़ाई की यह कसौटी, एक्सपर्ट से जानें परीक्षा क्रैक करने का गणित

जेईई मेन की तैयारी करते समय सुनिश्चित करें कि आपके बुनियादी सिद्धांत सही हों। दूसरे शब्दों में अवधारणाओं की पूरी समझ रखने वाले उम्मीदवार उन लोगों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं जो सिर्फ परीक्षा के लिए विषयों का अध्ययन/तैयारी करते हैं। जेईई एडवांस्ड की तैयारी के लिए उम्मीदवारों के पास समझ तर्क और विश्लेषणात्मक क्षमता कौशल होना चाहिए।

नई दिल्ली। इंजीनियरिंग की तैयारी कर रहे हर छात्र का सपना होता है कि जेईई की परीक्षा में सफलता अर्जित करना। जेईई की परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन के लिए एक सिलसिलेवार तरीके से परीक्षा की तैयारी करनी होती है। इसके लिए पाठ्यक्रम और परीक्षा पैटर्न की समुचित जानकारी होने के साथ आपके पास उपलब्ध समय के अनुसार एक महीने-वार योजना बनाने की आवश्यकता होती है।

अभी कुछ दिनों पहले राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी (एनटीए) ने जेईई मेन 2024 के परिणाम जारी किए थे। परीक्षा के लिए पंजीकरण कराने वाले 14.15 लाख छात्रों में से कुछ चुनिंदा छात्र, चमकते सितारों के रूप में उभरे हैं, जिनमें से 56 छात्रों ने पूर्ण 100 प्रतिशतता (100 परसेंटाइल) हासिल किए हैं।

अपनी जेईई मेन की तैयारी करते समय सुनिश्चित करें कि आपके बुनियादी सिद्धांत सही हों। दूसरे शब्दों में, अवधारणाओं की पूरी समझ रखने वाले उम्मीदवार उन लोगों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं जो सिर्फ परीक्षा के लिए विषयों का अध्ययन/तैयारी करते हैं। जेईई एडवांस्ड की तैयारी के लिए उम्मीदवारों के पास समझ, तर्क और विश्लेषणात्मक क्षमता कौशल होना चाहिए। इस प्रकार, उम्मीदवारों को ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में ही भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित के सभी बुनियादी सिद्धांत और कांसेप्ट बेहतर तरीके से मालूम होने चाहिए।

जेईई मेन 2024 में, एमिटी इंस्टीट्यूट फॉर कॉम्पिटिटिव एग्जामिनेशनस (एआईसीई) के 4 छात्रों ने प्रतिष्ठित 100 परसेंटाइल हासिल किया है। जिसमें आरव भट्ट इप्सित मित्तल, भावेश रामकृष्णन कार्तिक और अर्श गुप्ता(AIR 54) शामिल है। एआईसीई की निदेशक मीनाक्षी रावल कहती है कि हमारे छात्रों का शानदार प्रदर्शन वाकई सराहनीय है। उनकी सफलता, शिक्षा और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के प्रति, हमारे समग्र दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।

रावल कहती है कि जेईई में सफलता हासिल करने के लिए परीक्षा की तैयारी के लिए इसका व्यापक दृष्टिकोण बेहद जरूरी है। जेईई मेन 2024 को कैसे क्रैक करें इसका एक बेहतरीन तरीका और महत्वपूर्ण कारक स्व-मूल्यांकन भी है। आप बहुत सारे मॉक टेस्ट के साथ अपनी तैयारी जारी रखें। जेईई मेन मॉक टेस्ट और सैंपल पेपर लेने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उम्मीदवार समय प्रबंधन की कला में महारत हासिल कर लेते हैं, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक अभ्यास के साथ, किसी प्रश्न को हल करने में लगने वाला समय पहले के प्रयास की तुलना में कम हो जाता है। हालांकि, यदि ऐसा नहीं हो रहा है, तो उम्मीदवारों को सतर्क हो जाना चाहिए और विश्लेषण करना शुरू कर देना चाहिए कि सैंपल पेपर और मॉक टेस्ट का उनका अभ्यास किस दिशा में जा रहा है। यह भी महत्वपूर्ण है कि आप संतुलित आहार लें और अच्छा आराम/नींद लें। हर दिन जेईई मेन की तैयारी के लिए इसे एक सतत और चालू प्रक्रिया बनाने के लिए, इन कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

रावल कहती है कि आईआईटी जेईई परीक्षा में सफलता के लिए समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है। समयबद्ध परिस्थितियों में समस्याओं को हल करने का अभ्यास करें और परीक्षा के दौरान प्रश्नों को प्राथमिकता देने और समय प्रबंधन के लिए एक रणनीति विकसित करें। एक यथार्थवादी अध्ययन योजना बनाएं जो आपकी ताकत, कमजोरियों और उपलब्ध समय के अनुरूप हो। इसमें नियमित अध्ययन के घंटे, ब्रेक और पुनरीक्षण सत्र शामिल होने चाहिए।

वह कहती है कि एआईसीई की सफलता की कहानी बता रही है कि इतनी बड़ी संख्या में छात्रों ने जेईई एडवांस्ड परीक्षा के लिए क्वालीफाई किया है। उन्होंने कहा कि हम कोशिश करते हैं कि भौतिकी, गणित और रसायन विज्ञान में छात्रों को पूरी तरीके से तैयार करें और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की चुनौतियों से निपटने के लिए अच्छी तरह से तैयार करें।

अब फाइलों में दफन होगी नोएडा प्राधिकरण की हेलीपोर्ट परियोजना, सामने आई ये वजहें

हेलीपोर्ट का डिजाइन बेल 412 (12 सीटर) के अनुसार तैयार किया गया। जिसमें 5 बेल 412 के पार्किंग ऐप्रान की सुविधा, वीवीआइपी या आपातकाल के समय 26 सीटर एमआइ 172 भी उतारने की सुविधा शामिल की गई। जिस कंपनी को इसका निर्माण करना था, उसे 30 वर्ष के लिए संचालन कर जिम्मा देना तय किया गया।

अमलीजामा पहनाने के लिए वर्ष 2022 में दो बार परियोजना का टेंडर भी निकाला गया लेकिन सिर्फ एक ही कंपनी रिफेक्स एयरपोर्ट एवं ट्रांसपोर्टेशन प्राइवेट लिमिटेड ने आवेदन किया है। एक बार भी फाइनेंसियल बिड नहीं खोली जा सकी। इसकी बड़ी वजह यह रही कि फाइनेंशियल बिड खोलने को लेकर प्राधिकरण की तत्कालीन सीईओ रितु माहेश्वरी ने रूचि नहीं दिखाई।

परिवहन विशेष न्यूज

अमलीजामा पहनाने के लिए वर्ष 2022 में दो बार परियोजना का टेंडर भी निकाला गया लेकिन सिर्फ एक ही कंपनी रिफेक्स एयरपोर्ट एवं ट्रांसपोर्टेशन प्राइवेट लिमिटेड ने आवेदन किया है। एक बार भी फाइनेंसियल बिड नहीं खोली जा सकी। इसकी बड़ी वजह यह रही कि फाइनेंशियल बिड खोलने को लेकर प्राधिकरण की तत्कालीन सीईओ रितु माहेश्वरी ने रूचि नहीं दिखाई।

नोएडा। प्राधिकरण की महत्वाकांक्षी हेलीपोर्ट योजना को बंद किया जा सकता है। इसके अधिकारिक संकेत मिलने लगे हैं। इस परियोजना की इकोनामिक वायबिलिटी नहीं होने की वजह से हवाई सेवा से जुड़ी कई कंपनियों ने बातचीत के बाद परियोजना के नोएडा में सफल होने की संभावना को कम आंका जा रहा है।

जेवर स्थित नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा आने, दिल्ली आइजीआइ एयरपोर्ट नजदीक होने के कारण यहां पर लोगों के नहीं पहुंचने की संभावना जताई जा रही है। इसलिए परियोजना को ठंडे बस्ते में डालने का निर्णय लिया गया है।

प्राधिकरण अधिकारियों के मुताबिक प्राधिकरण ने वर्ष 2020 में सार्वजनिक निजी भागीदारी के आधार पर वाणिज्यिक संचालन के लिए एक ग्रीनफील्ड हेलीपोर्ट विकसित करने का निर्णय लिया था। यह निर्णय जेवर में नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे, फिल्म सिटी, मल्टी-माडल लाजिस्टिक्स और ग्रेटर नोएडा में ट्रांसपोर्ट हब जैसे अन्य क्षेत्रों में चल रहे विकास को देख लिया गया।

2022 में निकाला गया ग्लोबल टेंडर

नोएडा सेक्टर-151ए में पब्लिक प्राइवेट पाटनर्शिप पीपीपी (माडल) पर प्रस्तावित परियोजना का खाका तैयार कर वर्ष 2022 में 43.13 करोड़ रुपए खर्च करने निर्णय कर ग्लोबल टेंडर निकाल दिया।

हेलीपोर्ट का डिजाइन बेल 412 (12 सीटर) के अनुसार तैयार किया गया। जिसमें 5 बेल 412 के पार्किंग ऐप्रान की सुविधा, वीवीआइपी या आपातकाल के समय 26 सीटर एमआइ 172 भी उतारने की सुविधा शामिल की गई। जिस कंपनी को इसका निर्माण करना था, उसे 30 वर्ष के लिए संचालन कर जिम्मा देना तय किया गया।

अमलीजामा पहनाने के लिए वर्ष 2022 में दो बार परियोजना का टेंडर भी निकाला गया, लेकिन सिर्फ एक ही कंपनी रिफेक्स एयरपोर्ट एवं ट्रांसपोर्टेशन प्राइवेट लिमिटेड ने आवेदन किया है। एक बार भी फाइनेंसियल बिड नहीं खोली जा सकी।

इसकी बड़ी वजह यह रही कि फाइनेंशियल बिड खोलने को लेकर प्राधिकरण की तत्कालीन सीईओ रितु माहेश्वरी ने रूचि नहीं दिखाई। लंबे समय तक फाइल को अपने पास रोक कर रखा।

खामियाजा यह हुआ कि फाइनेंशियल बिड खोलने के लिए 180 दिन की निर्धारित समय सीमा पार हो गई, 210 दिन बाद इसकी बिड खोलने का प्रस्ताव शासन को भेजा गया, जो परियोजना का टेंडर रद करने का भी कारण बना।

सुझाव पर अमल नहीं

हेलीपोर्ट निर्माण व संचालन कंपनियों को आर्थिक रूप से यह परियोजना हितकर नहीं लगी है। इसमें टेंडर नियम शर्त को उनके सुझाव के आधार पर तैयार नहीं किया गया। जबकि हवाई सेवा से जुड़ी 18 कंपनियों को बुलाया गया था। जिसमें से 8 कंपनियां बैठक में शामिल हुई।

पांच ने सुझाव दिए, इन्हीं सुझावों पर एनआइटी में बदलाव किया गया। जिसके बाद बोर्ड से अप्रूवल के बाद ग्लोबल टेंडर जारी किया गया था। हवाई सेवा से जुड़ी कंपनियों के सुझाव को ठीक से अधिकारियों ने अमल नहीं किया। यही कारण रहा की कंपनियों ने टेंडर में रुचि नहीं दिखाई। दो बार ग्लोबल टेंडर जारी होने के बाद भी सिर्फ एक ही कंपनी आई।

इन कारणों से परवान नहीं चढ़ी परियोजना

नोएडा एयरपोर्ट और प्रस्तावित हेलीपोर्ट का नजदीक होना

जिन स्थानों का हवाई सफर बनाया गया वह महज 100 से 500 किमी के रेंज में है।

यहां सड़क मार्ग से आसानी से पहुंचा जा सकता है।

शर्त में जो कंपनी इसका निर्माण करेगी वह सिर्फ 30 साल तक ही संचालन करेगी।

टेंडर शर्त में कई ऐसे क्लाज है जिनका पालन करना कंपनियों के लिए मुश्किल है।

देश के इन शहरों को नोएडा से जोड़ा जाना था

दूरी	स्थान
100 से 200 किमी	मथुरा, आगरा
200 से 300 किमी	मसूरी, यमुनोत्री, पंतनगर, नैनीताल, उत्तरकाशी, श्रीनगर, गोचर, अलमोड़ा, न्यू टिहरी, शिमला, हरिद्वार, जयपुर, चंडीगढ़, ओली
300 से 400 किमी	बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, जोशीमठ, रामपुर, मंडी, अजमेर
400 से 500 किमी	मनाली, बीकानेर, जोधपुर, डलहौजी, अयोध्या

हेलीपोर्ट निर्माण व संचालन कंपनियों को आर्थिक रूप से यह परियोजना हितकर नहीं लगी है। इसलिए परियोजना को अभी रोक दिया गया है।

-संजय कुमार खत्री, अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, नोएडा प्राधिकरण।

बम की धमकी मिलने के अगले दिन सामान्य रूप से खुले स्कूल, समय से पहले स्कूल पहुंचे छात्र

दिल्ली-एनसीआर में बुधवार को जिस तरह से 200 से अधिक स्कूलों को बम से उड़ाने धमकी मिली थी और अभिभावकों के साथ ही बच्चों में भी डर था उसके बाद गुरुवार की सुबह बहुत ही सामान्य रही। जिस तरह रोजाना बच्चे समय से पहले स्कूल पहुंचते हैं वैसे ही पहुंचे। सभी पीरियड भी सामान्य रूप से चले और छात्रों में कोई डर नहीं दिखा।

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा और ग्रेटर नोएडा वेस्ट में स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल,एस्टर पब्लिक स्कूल,सर्वोत्तम इंटरनेशनल स्कूल, पैसिफिक से लेकर अन्य स्कूलों में बृहस्पतिवार को छात्र स्कूल समय से 10 मिनट पहले ही पहुंच गए।

सामान्य दिनों की तरह स्कूल में कक्षा संचालित की जा रही हैं। दिल्ली एनसीआर के स्कूलों को बुधवार को मिले धमकी भरे संदेश के फर्जी घोषित होने के बाद अभिभावकों ने चैन की सांस ली थी।

दिल्ली पब्लिक स्कूल ग्रेटर नोएडा वेस्ट की प्रधानाचार्य मंजू वर्मा ने बताया कि सभी कक्षाएं सामान दोनों की तरह संचालित हो रही हैं। रोजाना की तरह स्कूल सभी छात्र आए हुए हैं।

'छात्रों के सुरक्षा की जिम्मेदारी स्कूल प्रबंधन की'

छात्रों की सुरक्षा के जिम्मेदारी स्कूल प्रबंधन की है। स्कूल प्रबंधन की ओर से पूरे स्कूल में सर्च अभियान चलाया गया था। अभिभावकों ने भी स्कूल प्रबंधन की तारीफ की है कि उन्होंने आपातकालीन स्थिति को अच्छे से संभाला।

वहीं डेल्टा दो स्थित एस्टर पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य प्रीति शर्मा ने बताया कि स्कूल में सभी कक्षाएं संचालित हो रही है प्री प्राइमरी से लेकर 12वीं तक के छात्र स्कूल में आए हैं। बसों से आने वाले छात्र बस से आए हैं। आनलाइन कक्षाएं स्कूलों में संचालित नहीं हो रही है।

तीसरे चरण में मुलायम कुनबे की होगी 'अग्नि' परीक्षा

तीसरे चरण के चुनावी मैदान में केवल आठ महिला प्रत्याशी उतरी हैं। वहीं 25 से 40 आयु वर्ष वाले 28, 41 से 60 वर्ष के 54 तथा 61 से 80 वर्ष के 18 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। इस चरण में मुलायम और कल्याण के गढ़ में मुख्य मुकाबला होगा।

अजय कुमार

उत्तर प्रदेश में अब 07 मई को होने वाले तीसरे चरण के चुनाव में कई दिग्गज नेताओं के भाग्य का फैसला होना है तीसरे चरण में ब्रज और रुहेलखंड की 10 सीटों पर मतदान होगा, जिसमें संभल, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, बदायूं, बरेली, हाथरस, आगरा, मैनपुरी, एटा एवं आंवला की सीटें शमिल हैं। तीसरे चरण में प्रदेश में विभिन्न राजनीतिक दलों के 100 प्रत्याशी चुनावी मैदान में हैं। इनमें 46 करोड़पति हैं। भाजपा, सपा और बसपा के सभी प्रत्याशी करोड़पति हैं, जबकि 25 प्रतिशत प्रत्याशियों के ऊपर आपराधिक मामले दर्ज हैं। भाजपा के 10 में से चार, समाजवादी पार्टी के नौ में पांच, बहुजन समाज पार्टी के नौ में चार, राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी के दो में एक प्रत्याशी पर आपराधिक मामला दर्ज है। फतेहपुर सीकरी से कांग्रेस के उम्मीदवार रामनाथ सिंह सिकरवार के उनके ऊपर सर्वाधिक 17 आपराधिक मामले दर्ज हैं। दूसरे नंबर पर बसपा के टिकट पर फिरोजाबाद से चुनाव लड़ रहे चौधरी बशीर के ऊपर नौ आपराधिक मामले दर्ज हैं। तीसरे नंबर पर संभल से लोग पार्टी की टिकट पर चुनाव लड़ रहे चुनाव पवन पर तीन आपराधिक मामले दर्ज हैं।

तीसरे चरण के चुनावी मैदान में केवल आठ महिला प्रत्याशी उतरी हैं। वहीं 25 से 40 आयु वर्ष वाले 28, 41 से 60 वर्ष के 54 तथा 61 से 80 वर्ष के 18 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। इस चरण में मुलायम और कल्याण के गढ़ में मुख्य मुकाबला होगा। डिंपल यादव, अक्षय यादव और आदित्य यादव की सियासी किस्मत इसी चरण में तय होगी। डिंपल जीत जारी रखने और अक्षय यादव और आदित्य यादव सपा की खोई सीट वापस पाने की लड़ाई लड़ेंगे। वहीं, पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के बेटे राजवीर सिंह के सामने भी हैट्रिक लगाने की चुनौती होगी। वह, एटा से उम्मीदवार हैं। इस चरण की 10 में 8 सीटों पर इस समय भाजपा काबिज है। संभल और मैनपुरी सपा के खाते में हैं, बाकी 8 सीटों पर 2019 में भाजपा जीती थी। मुस्लिम बहुल संभल सीट से सांसद शफीकुर्रहमान बर्क का निधन होने के चलते सपा ने उनके पोते और कुंदरकी से विधायक जियाउर्रहमान बर्क को उम्मीदवार बनाया है। 2014 में यह सीट भाजपा जीती थी, लेकिन पिछले चुनाव में सपा-बसपा गठबंधन ने उसकी राह रोक दी थी। संभल में 2019 में हार का सामना करने वाले परश्मेवर लाल सैनी इस बार भी भाजपा के उम्मीदवार हैं, जबकि बसपा ने शौलत अली को टिकट दिया है। हाथरस, फतेहपुर सीकरी और बरेली में भाजपा हैट्रिक और आगरा एवं आंवला में लगातार चौथी जीत दर्ज करने की उम्मीद लिए मैदान में है। वहीं, सपा एवं कांग्रेस इस बार साथ हैं, जबकि बसपा अलग चुनाव लड़ रही है। इसलिए, अधिकतर सीटों पर मुकाबला त्रिकोणीय होने की ही उम्मीद है। तीसरे चरण की कुल 10 सीटों पर 100 प्रत्याशी मैदान में हैं, जिसमें हाथरस से 10, आगरा से 11, फतेहपुर से 10, फिरोजाबाद में 7, मैनपुरी में 8, एटा में 10 प्रत्याशी मैदान में हैं। बदायूं में 11, आंवला में 9 और बरेली में 13 प्रत्याशी मैदान में हैं।

सिलसिलेवार इन सीटों की समीक्षा की जाये तो आगरा लोकसभा सीट पर किसके सिर ताज सजेगा, यह बड़ा दिलचस्प होगा। अगर विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रत्याशियों पर नजर डालें तो केंद्रीय राज्य मंत्री और मौजूदा सांसद एसपी सिंह बघेल अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित इस सीट पर बतौर भाजपा प्रत्याशी हैं। बसपा ने कांग्रेस की राज्यसभा सदस्य रहीं सत्या बहन की पुत्री पूजा अमरोही को टिकट थमाया है। सपा ने पुराने बसपाई रहे जूता कारोबारी सुरेश चंद कर्दम पर भरोसा जताया है। बघेल पर अपना दबदबा बराकरार रखने तो सुरेश चंद कर्दम पर सपा के लिए पिछले तीन लोकसभा चुनावों में इस सीट पर पड़ा सूखा खत्म करने की चुनौती है। पूजा अमरोही के समक्ष पर बसपा का खाता खोलने की चुनौती होगी। मोहब्बत की नगरी आगरा चुनाव में किस पर प्रेम वर्षा करेगी, इस पर निगाहें लगी हैं।

बरेली लोकसभा सीट पर भाजपा ने आठ बार के सांसद संतोष गंगवार का टिकट काटकर भाजपा ने पूर्व राज्य मंत्री छत्रपाल गंगवार को उम्मीदवार बनाया। इसे लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में नाराजगी जरूर थी, लेकिन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रुहेलखंड में हुईं अपनी जनसभाओं के मंच पर संतोष गंगवार को स्थान देकर इस नाराजगी को दूर कर दिया है। 2009 में भाजपा के इस मजबूत किले को मामूली जीत के अंतर से ढहाने में कामयाब हुए पूर्व सांसद प्रवीण सिंह ऐरन को सपा ने फिर इसी उम्मीद से मैदान में उतारा है। यहां भाजपा-सपा की सीधी लड़ाई है।

संभल लोकसभा सीट के सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क के निधन के बाद इस सीट पर उनकी राजनीतिक विरासत संभालने के लिए कुंदरकी के सपा विधायक जियाउर्रहमान यहां समाजवादी उम्मीदवार हैं। पहले सपा ने शफीकुर्रहमान बर्क को टिकट थमाया था, लेकिन उनका निधन होने पर उनके पोते को मैदान में उतारा है। मुस्लिम बहुल इस सीट पर जियाउर्रहमान के कंधों पर अपने परिवार का वर्चस्व बरकरार रखने का दारोमदार होगा। बतौर भाजपा प्रत्याशी पूर्व एमएलसी परमेश्वर लाल सैनी के सामने इस सीट पर भाजपा को 2014 में मिली एकमात्र सफलता को दोहराने के साथ पिछले चुनाव में खुद को मिली हार का हिसाब चुकता करने की चुनौती है। बसपा के लिए पिछले दो चुनावों में यह सीट बंजर साबित हुई है। ऐसे में बसपा प्रत्याशी सौलत अली के लिए हाथी कितना प्रभावी होगा, यह देखना होगा।

मैनपुरी लोकसभा सीट सपा ने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ने के लिए पार्टी की मौजूदा सांसद डिंपल यादव को चुनाव मैदान में उतारा हैं। मुलायम सिंह के निधन से रिक्त हुई मैनपुरी सीट पर दिसंबर 2022 में हुए उपचुनाव में साइकिल की रफ्तार से प्रतिद्वंद्वियों को हतप्रभ कर उन्होंने यादव परिवार की राजनीतिक विरासत को संभाला था। अब उन पर इस विरासत को सहेजने और संजोये रखने की जिम्मेदारी है। सपा इस सीट पर 1996 से काबिज है। वहीं अब तक अजेय साबित हुई मैनपुरी सीट पर भगवा परचम लहराने के लिए भाजपा ने स्थानीय विधायक और योगी सरकार में पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री ठाकुर जयवीर सिंह को मैदान में उतारा है। यादव और शाक्य बिरादरियों की बड़ी आबादी वाली इस सीट पर बसपा ने पूर्व विधायक शिव प्रसाद यादव को मैदान में उतारा है।

बदायूं लोकसभा सीट पर भी यादव परिवार की साख का परीक्षा होगी। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पहले यहां चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव को टिकट दिया था। धर्मेन्द्र 2009 व 2014 में बदायूं से बतौर सपा प्रत्याशी सांसद चुने गए थे, लेकिन 2019 में चुनाव हार गए थे। अखिलेश ने इस बार फिर उन्हें यहां से टिकट थमाया, लेकिन बाद में उन्हें आजमगढ़ से प्रत्याशी बनाकर चाचा शिवपाल सिंह यादव को बदायूं के चुनाव मैदान में उतार दिया। बाद में स्थानीय इकाई की मांग पर अखिलेश ने चाचा शिवपाल की जगह उनके पुत्र आदित्य यादव को प्रत्याशी घोषित कर दिया। भाजपा ने यहां वर्तमान सांसद संघमित्रा मौर्य का टिकट काटकर ब्रज क्षेत्र के अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य को उम्मीदवार बनाया है तो बसपा ने मुस्लिम खां पर भरोसा जताया है। भाजपा यहां अपना कब्जा बरकरार रखने के लिए जोर लगाएगी।

बदायूं लोकसभा सीट पर भी यादव परिवार की साख का परीक्षा होगी। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने पहले यहां चचेरे भाई धर्मेंद्र यादव को टिकट दिया था। धर्मेन्द्र 2009 व 2014 में बदायूं से बतौर सपा प्रत्याशी सांसद चुने गए थे, लेकिन 2019 में चुनाव हार गए थे। अखिलेश ने इस बार फिर उन्हें यहां से टिकट थमाया, लेकिन बाद में उन्हें आजमगढ़ से प्रत्याशी बनाकर चाचा शिवपाल सिंह यादव को बदायूं के चुनाव मैदान में उतार दिया। बाद में स्थानीय इकाई की मांग पर अखिलेश ने चाचा शिवपाल की जगह उनके पुत्र आदित्य यादव को प्रत्याशी घोषित कर दिया। भाजपा ने यहां वर्तमान सांसद संघमित्रा मौर्य का टिकट काटकर ब्रज क्षेत्र के अध्यक्ष दुर्विजय सिंह शाक्य को उम्मीदवार बनाया है तो बसपा ने मुस्लिम खां पर भरोसा जताया है। भाजपा यहां अपना कब्जा बरकरार रखने के लिए जोर लगाएगी।

आंवला लोकसभा सीट पर भाजपा सांसद और प्रत्याशी धर्मेन्द्र कश्यप जीत की तिकड़ी लगाने के इरादे से फिर मैदान में हैं। उनकी राह रोकने के लिए समाजवादी पार्टी ने नीरज मौर्य को मैदान में उतारा है जो शाहजहांपुर के जलालाबाद विधानसभा क्षेत्र से 2007 व 2012 में बसपा के टिकट पर विधायक चुने गए थे। बसपा ने इस सीट पर सपा छोड़कर आए आंवला नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष सैयद आबिद अली को प्रत्याशी बनाया है। यहां पर भी सभी दल जातियों के जरिये अपने समीकरण बैठाने में लगे हैं। वैसे आंवला सीट पर ऊंट किस करवट बैठेगा, यह तो चार जून को चुनाव परिणाम आने के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। हाथरस लोकसभा सीट बाहरी प्रत्याशियों को सुहाती रही है। भाजपा ने यहां अपने सांसद राजवीर सिंह दिलेर का टिकट काटकर अलीगढ़ की खैर सीट के विधायक और योगी सरकार में राजस्व राज्य मंत्री अनूप वाल्मीकि को प्रत्याशी बनाया है। उन पर अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित इस सीट पर भाजपा का कब्जा बरकरार रखने की जिम्मेदारी होगी। वहीं बसपा ने साफ्टवेयर इंजीनियर हेमबाबू धनगर और सपा ने जसवीर वाल्मीकि को प्रत्याशी घोषित किया है। सपा और बसपा प्रत्याशी सहारनपुर के निवासी हैं। भाजपा को अपनी केंद्रीय योजनाओं और मोदी-योगी पर भरोसा है तो विपक्ष को अपने समीकरणों का। देखना होगा कि इस सीट पर फिर कमल खिलता है या सपा-बसपा अपना खाता खोल पाने में कामयाब होती हैं।

एटा लोकसभा सीट पर पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के पुत्र और वर्तमान भाजपा सांसद राजवीर सिंह यहां बीजेपी की तरफ से हैट्रिक लगाने के इरादे से फिर चुनाव मैदान में हैं। राजवीर लोध बिरादरी से हैं तो सपा ने शाक्य बिरादरी के देवेश शाक्य पर भरोसा जताया है। देवेश शाक्य औरैया से दो बार जिला पंचायत सदस्य रह चुके हैं। बसपा ने कांग्रेस छोड़कर आए पेशे से वकील मोहम्मद इरफान को उम्मीदवार बनाकर चुनाव का तीसरा कोण उभारने की कोशिश की है। बसपा अभी तक एटा सीट नहीं जीत सकी है। यह क्षेत्र पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह के प्रभाव वाला माना जाता है जिसे बरकरार रखने में राजवीर सिंह भी सफल रहे हैं। लोध मतदाता इसकी धुरी हैं। दूसरी ओर समाजवादी पार्टी शाक्य बिरादरी को साथ लेते हुए मुस्लिमों के साथ अपना समीकरण इस चुनाव में देख रही है।

फतेहपुर सीकरी लोकसभा सीट पर फिलहाल दिलचस्प मुकाबले के आसार हैं। पिछले लोकसभा चुनाव में 4.95 लाख वोटों से जीतने वाले जाट बिरादरी के भाजपा सांसद राजकुमार चाहर इस बार फिर यहां कमल खिलाने के इरादे से मैदान में हैं। बसपा ने चुनावी गणित को ध्यान में रखते हुए ब्राह्मण प्रत्याशी राम निवास शर्मा पर भरोसा जताया है तो कांग्रेस ने ठाकुर बिरादरी के रामनाथ सिकरवार को उतारा है। फतेहपुर सीकरी के भाजपा विधायक चौधरी बाबूलाल के पुत्र रामेश्वर चौधरी ने निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर पर्चा भरकर यहां होने वाली लड़ाई को रोमांचक बना दिया है। रामेश्वर चौधरी भी जाट बिरादरी से ताल्लुक रखते हैं।

1.53 करोड़ रुपये की कीमत पर BMW ने लॉन्च की नई M4 कॉम्पटीशन M xDrive, जानें क्या है खासियत

परिवहन विशेष न्यूज

लग्जरी वाहन निर्माता BMW भारत में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी को ऑफर करती है। कंपनी की ओर से नई कूपे M4 Competition M xDrive को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। इसे कितने दमदार इंजन के साथ लाया गया है। बाजार में इसका किनसे मुकाबला होगा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता BMW की ओर से भारतीय बाजार में नई गाड़ी को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से M4 Competition M xDrive को आधिकारिक तौर पर भारत में लाया गया है। हम इस खबर में आपको BMW M4 Competition M xDrive के फीचर्स, इंजन और कीमत की जानकारी दे रहे हैं।

जर्मनी की लग्जरी कार कंपनी BMW ने देश में M4 Competition M xDrive कूपे को लॉन्च कर दिया है। कंपनी की यह गाड़ी काफी बेहतरीन फीचर्स और दमदार इंजन के साथ आई है।

कितना दमदार इंजन

BMW M4 Competition M xDrive में कंपनी ने तीन लीटर का एम ट्विन पावर टर्बो एस58 छह सिलेंडर इन-लाइन पेट्रोल इंजन को दिया है। इस इंजन से गाड़ी को 530 हॉर्स पावर और 650 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इस इंजन से कार को इतनी ताकत मिलती है जिससे इसे सिर्फ 3.5 सेकेंड में जीरो से 100 किलोमीटर की स्पीड पर चलाया जा सकता है। ड्राइविंग के लिए इसमें एफिशियंट, स्पोर्ट और स्पोर्ट प्लस मोड्स को दिया गया है। M4 Competition M xDrive में आठ स्पीड स्टेपट्रॉनिक ट्रांसमिशन को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

BMW M4 Competition M xDrive में एक्टिव सीट वेंटिलेशन, एडेप्टिव एलईडी लाइट्स, नई सीएसएल स्टाइल टेललाइट्स, एम लोगो, एम ग्राफिक्स, कार्बन फाइबर रूफ, 19 औश्र 20 इंच के अलॉय व्हील्स, एम कम्पाउंड ब्रेकिंग सिस्टम, एम कार्बन एक्सटीरियर पैकेज, कर्व्ड डिस्प्ले के साथ 8.5 ओएस, हीटेड सीट्स, हरमन कार्डन सराउंड साउंड के साथ 16 स्पीकर, 360 डिग्री कैमरा, पार्किंग असिस्टेंट प्लस, लेन कंट्रोल असिस्ट, बीएमडब्ल्यू ड्राइव रिकॉर्डर, हेड अप डिस्प्ले, फ्रंट और रियर पार्किंग सेंसर, ड्राइवर और पैसेंजर हेड एयरबैग, डीएससी, एबीएस, एएससी, एमडीएम, सीबीसी, डीबीसी, डीएससी जैसे फीचर्स को दिया जा रहा है।

कंपनी के अधिकारियों ने कही यह बात

BMW इंडिया के अध्यक्ष विक्रम पाहवा ने कहा कि एम की कोई सीमा नहीं है। नई BMW M4 Competition M xDrive वास्तव में बीएमडब्ल्यू एम के सर्वश्रेष्ठ - अजेय शक्ति, अविश्वसनीय हैंडलिंग और स्पोर्टी स्टाइल का प्रतीक है। कार बेहतर डायनैमिज्म और प्रीमियम अपील को दिखाती है, जो इसके इंडीपेंडेंट, परफॉर्मेंस ओरिएंटिड पर्सनैलिटी को दिखाती है। यह वास्तव में एक एलीट स्पोर्टिंग आइकन है। नई बीएमडब्ल्यू एम4 कॉम्पिटिशन एम एक्सड्राइव की असाधारण इंजीनियरिंग सड़क और रेसट्रैक दोनों जगहों पर अविश्वसनीय ड्राइविंग क्षमता और उत्कृष्ट शक्ति प्रदान करती है।

कितनी है कीमत

BMW M4 Competition M xDrive को भारत में 1.53 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

रॉयल इन्फील्ड, हीरो, सुजुकी और टीवीएस ने अप्रैल 2024 में कैसा किया प्रदर्शन, जानें डिटेल

भारतीय बाजार में हर साल लाखों की संख या में दो पहिया वाहनों की बिक्री होती है। इस सेगमेंट में कई कंपनियों की ओर से कई कुछ बेहतरीन वाहनों को ऑफर किया जाता है। Royal Enfield Hero Motocorp Suzuki और TVS के लिए April 2024 बिक्री के मामले में कैसा रहा है। इन चारों कंपनियों ने बीते महीने में कितने यूनिट्स वाहनों की बिक्री की है। आइए जानते हैं।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। भारत में हर महीने बड़ी संख्या में वाहनों की बिक्री होती है। इनमें सबसे ज्यादा बिक्री दो पहिया वाहन सेगमेंट में होती है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि April 2024 में Royal Enfield, Hero Motocorp, Suzuki Motorcycle और TVS ने कितने यूनिट्स वाहनों की बिक्री की है।

Royal Enfield की कैसी रही बिक्री

भारत में Bullet जैसी दमदार इंजन वाली बाइक्स को ऑफर करने वाली कंपनी Royal Enfield ने April 2024 में 81870 यूनिट्स वाहनों की बिक्री की है। कंपनी ने पिछले साल अप्रैल महीने में 71136 यूनिट्स वाहनों की बिक्री की थी। इस तरह कंपनी को इस साल बिक्री के मामले में 12 फीसदी की ग्रोथ हासिल हुई है। कंपनी ने बताया है कि April 2024 में 6832 यूनिट्स को एक्सपोर्ट भी किया गया है।

Hero Motocorp के लिए कैसा रहा April 2024

भारत की प्रमुख दो पहिया वाहन निर्माताओं में शामिल Hero Motocorp ने April 2024 में 5.33 लाख यूनिट्स वाहनों की बिक्री की है। कंपनी के मुताबिक बीते महीने में 34.7 फीसदी की ग्रोथ हासिल हुई है। अप्रैल 2023 में हीरो मोटोकॉर्प ने 3.96 लाख यूनिट्स वाहनों की बिक्री की थी। वहीं मार्च 2024 में भी कंपनी ने 490415 यूनिट्स की बिक्री की थी।

Suzuki को भी April 2024 में हासिल हुई बढ़त

जापानी दो पहिया वाहन निर्माता Suzuki को भी April 2024 में बिक्री के मामले में बढ़त मिली है। कंपनी ने बीते महीने में कुल 99377 यूनिट्स वाहनों की बिक्री की है। अप्रैल 2023 में कंपनी ने कुल 88731 यूनिट्स की बिक्री की थी। ऐसे में आंकड़ों के मुताबिक कंपनी को बीते महीने में 12 फीसदी की ग्रोथ मिली है। भारतीय बाजार के अलावा एक्सपोर्ट के मामले में कंपनी को नेगेटिव ग्रोथ मिली है। जानकारी के मुताबिक पिछले महीने कंपनी ने सिर्फ 11310 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है।

TVS के लिए कैसा रहा April 2024

एक और भारतीय दो पहिया वाहन निर्माता TVS ने भी April 2024 में कुल बिक्री की जानकारी दी है। कंपनी के मुताबिक बीते महीने में कुल 383615 यूनिट्स की बिक्री हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी को 25 फीसदी की ग्रोथ हासिल हुई है। अप्रैल 2023 में टीवीएस ने 306224 यूनिट्स की बिक्री की थी। कंपनी ने एक्सपोर्ट में भी 12 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की है। अप्रैल 2024 में कंपनी ने 80508 यूनिट्स को एक्सपोर्ट किया है।

इसुजु के लाइफस्टाइल पिकअप वी क्रॉस का प्रेस्टीज वेरिएंट हुआ लॉन्च, जानें खूबियां और कीमत

भारत में लाइफस्टाइल पिकअप के तौर पर Isuzu की ओर से V Cross को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से हाल में ही V Cross के Prestige वेरिएंट को कुछ अपडेट्स के साथ लॉन्च किया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया जा रहा है। किस कीमत पर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। Isuzu की ओर से अपने लाइफस्टाइल पिकअप ट्रक V Cross को कई अपडेट के साथ लॉन्च किया गया है। कंपनी ने देश में इसके Prestige वेरिएंट को लॉन्च किया है। इसमें कई सेफ्टी फीचर्स के साथ ही बेहतरीन फीचर्स को दिया है। हम इस खबर में आपको इसकी कीमत और अन्य जानकारियों को दे रहे हैं।

Isuzu ने लॉन्च किया V Cross का नया Prestige वेरिएंट

पिकअप ट्रक को ऑफर करने वाली कंपनी Isuzu ने भारत में अपने लाइफस्टाइल पिकअप ट्रक V Cross का नया Prestige वेरिएंट लॉन्च किया है। इसमें कंपनी की ओर से कई अपडेट्स किए गए हैं, जिनमें कई नए फीचर्स को भी जोड़ा गया है। जिसके बाद इसे खरीदना और फायदेमंद हो सकता है।

कैसे हैं फीचर्स

Isuzu ने V Cross के नए वेरिएंट में टीसीएस, ईएससी, एचडीसी और एचएसए जैसे सेफ्टी फीचर्स को जोड़ा गया है। इसके साथ ही इसमें थ्री पाइंट सीटबेल्ट को भी दिया है। कंपनी ने बताया है कि रियर आक्यूपेंट्स के आराम का ध्यान रखते हुए इंक्लाइंड बैकरेस्ट डिजाइन को और बेहतर किया गया है। वहीं इसके एक्सटीरियर को ज्यादा बेहतर करने के लिए डार्क ग्रे रंग में कुछ इंसर्ट्स को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

कंपनी के डिप्टी एमडी तोरू किशीमोटो ने कहा कि हमें भारत को अपना पहला लाइफस्टाइल एडवेंचर यूटिलिटी वाहन पेश करने में बेंचमार्क स्थापित करने पर गर्व है और लॉन्च के बाद से हमारे यात्री वाहनों की पिक-अप रेंज को लगातार अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। हम इस सफलता की कहानी को आगे बढ़ाते हुए खुश हैं।' हमें विश्वास है कि आकांक्षी उत्पादों की इस सीरीज के साथ, हम उभरते प्रगतिशील भारतीय ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस क्षेत्र में अपनी स्थिति को और मजबूत करेंगे। पैसेंजर पिक-अप की नई रेंज निश्चित रूप से हमारे मूल्यवान ग्राहकों के लिए बेहतरीन स्तर के डिजाइन, प्रदर्शन, बहुमुखी प्रतिभा, गुणवत्ता, सुरक्षा और ड्राइविंग आराम को बढ़ाएंगे।

कितनी है कीमत

कंपनी ने वी-क्रॉस की शुरूआती कीमत 21.19 लाख रुपये एक्स शोरूम तय की है। इस कीमत पर इसके हाई-लैंडर वेरिएंट को खरीदा जा सकता है। इसके बाद इसके जेड वेरिएंट को ऑफर किया जाता है, जिसकी एक्स शोरूम कीमत 25.75 लाख रुपये है। इसके बाद जेड Prestige वेरिएंट को लाया गया है। जिसकी एक्स शोरूम कीमत 26.91 लाख रुपये है। यह सभी कीमतें चेन्नई की हैं। कंपनी के मुताबिक इसके लिए आज से बुकिंग को शुरू कर दिया गया है और जल्द ही इसकी डिलीवरी को भी शुरू किया जाएगा।

बिक्री के मामले में होंडा के लिए बेहतर साबित हुआ अप्रैल 2024, जानें कैसा रहा प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

जापानी कार निर्माता Honda की ओर से भारतीय बाजार में बेहतरीन तकनीक के साथ सेडान और एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से मिली जानकारी के मुताबिक April 2024 के दौरान होंडा कार इंडिया ने कितनी कारों और एसयूवी की बिक्री की है। एक सपोर्ट के मामले में कंपनी की बिक्री कैसी रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। Honda Cars India की ओर से April 2024 में बिक्री के आंकड़ों को जारी किया गया है। कंपनी ने बीते महीने कितनी यूनिट्स कार और एसयूवी की बिक्री की है। हम इस खबर में आपको कंपनी की बिक्री की जानकारी दे रहे हैं।

April 2024 में Honda की कितनी हुई बिक्री

Honda Cars India ने April 2024 में हुई बिक्री की जानकारी को सार्वजनिक किया है। कंपनी के मुताबिक बीते महीने में कुल 10867 यूनिट्स की बिक्री देशभर में हुई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी ने 42 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की है। पिछले साल अप्रैल महीने में होंडा ने कुल 7676 यूनिट्स की बिक्री की थी।

एक सपोर्ट में किया बेहतर प्रदर्शन

कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक अप्रैल 2024 के दौरान होंडा ने 6516 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है। जबकि भारतीय बाजार में कंपनी ने कुल 4351 यूनिट्स की बिक्री की है। कंपनी ने ईयर ऑन ईयर बेसिस पर एक्सपोर्ट में 175 फीसदी की बढ़त को हासिल किया है।

बिक्री पर कंपनी ने दी यह जानकारी

होंडा कार्स इंडिया के मार्केटिंग और सेल्स के वीपी कुणाल बहल ने बताया कि अप्रैल में हमारी नियोजित उत्पादन मात्रा एलिवेट और सिटी उत्पादन के छह-एयरबैग स्टैंडर्ड वेरिएंट में स्विचओवर के कारण कम थी और निर्यात भी उसी के अनुरूप रहा है। दूसरी ओर, एलिवेट के निर्यात से एचसीआईएल के निर्यात की मात्रा में उल्लेखनीय वृद्धि जारी है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 175% बढ़ी है।

कैसा है पोर्टफोलियो

Honda Cars India फिलहाल भारतीय बाजार में चार कारों की बिक्री करती है। इनमें Honda Amaze, Honda City, Honda City E:HEV और Honda Elevate शामिल हैं। कंपनी की ओर से सबसे सस्ती कार के तौर पर Amaze को ऑफर किया जाता है। वहीं Honda City E:HEV को हाइब्रिड तकनीक के साथ ऑफर किया जाता है।

दुनिया गोल है

स्पिरिचुअल हीलर
सिद्धगुरु प्रमोद जी

भूगोल हमें बताता है कि हमारी पृथ्वी चपटी और गोलाकार आकार की है, जिसका मतलब है कि यह ज्यादातर गोलाकार है, लेकिन अपने धुरुवों पर थोड़ी चपटी है और भूमध्य रेखा पर थोड़ी उभरी हुई है। यह लगभग एक अनियमित आकार के दीर्घ वृत्त की तरह की है।

हमारी सोच बदली कि नहीं, हमारी नीयत बदली कि नहीं, हमारा व्यवहार बदला कि नहीं, यह पैमाना है आध्यात्मिकता का। आध्यात्मिक हो गए तो संत हो गए। संत हो गए तो दुनिया की सेवा में लग गए। दुनिया की सेवा में लग गए तो सूर्य के चारों ओर के चक्कर वाला चरण पूरा होने लग गया। हम परिवार को समय दें, परिवार के लिए कुछ करें, और लगातार करते रहें, यह हमारी धुरी पर हमारा चक्कर है। हम समाज को समय दें, समाज के लिए कुछ करें, और लगातार करते रहें, यह समाज रूपी सूर्य के चारों ओर हमारा चक्कर है

भूगोल हमें बताता है कि हमारी पृथ्वी चपटी और गोलाकार आकार की है, जिसका मतलब है कि यह ज्यादातर गोलाकार है, लेकिन अपने धुरुवों पर थोड़ी चपटी है और भूमध्य रेखा पर थोड़ी उभरी हुई है। यह लगभग एक अनियमित आकार के दीर्घ वृत्त की तरह की है। इसके अलावा, अन्य ग्रहों की तरह पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है और यह अपनी धुरी पर भी घूमती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर दाहिनी ओर यानी पूर्व दिशा में 23.5 डिग्री झुकी हुई भी है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है जिसके कारण दिन और रात होते हैं क्योंकि पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने होता है वहां सूर्य की रोशनी पहुंचने के कारण दिन होता है और जो भाग पीछे छुप जाता है वहां रात हो जाती है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है उसके कारण हम विभिन्न मौसम देख पाते हैं। पृथ्वी लगभग गोलाकार है और समय, स्थान और स्थिति के अनुसार दुनिया के लोगों का व्यवहार बदलते मौसम की तरह हमेशा बदलने वाला होने के कारण दुनिया के बारे में भी यह जुमला बन गया कि दुनिया गोल है। आज हम अपने आसपास की दुनिया में जो भी गड़बडियां देखते हैं उसका कारण यही है कि 'दुनिया गोल है', यानी, लोगों के व्यवहार के बारे में कोई सटीक भविष्यवाणी कर पाना हमेशा संभव नहीं है। मनोवैज्ञानिक भी मानते हैं कि एक ही स्थिति पर अलग-अलग व्यक्तियों की राय, नजरिया और व्यवहार अलग-अलग होंगे। यह तो रही दुनियावी स्थिति, लेकिन अगर हमें एक सीधे-सच्चे इनसान की तरह इसी दुनिया में जीवन बिताना हो तो हमें क्या करना होगा? हम पहले ही कह चुके हैं कि पृथ्वी गोल है, दायीं ओर झुकी हुई है, अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य के भी चारों ओर चक्कर लगाती है। सवाल यह है कि पृथ्वी के गोल होने का, अपनी धुरी पर घूमने का, दायीं ओर झुके हुए होने का, सूर्य के चारों तरफ चक्कर लगाने का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव है, या हम इससे क्या सीख सकते हैं?

पृथ्वी गोल है, यानी इसका कोई आरंभ और कोई अंत नहीं है। इसे हम यूं भी कह सकते हैं कि पृथ्वी का गोला बनाने के लिए हम जहां से शुरू करते हैं, उसका अंत भी वहीं होगा। हमारा जीवन भी ऐसा ही होना चाहिए। हम पैदा होते हैं, बड़े होते हैं, पढ़ते-लिखते हैं, पढ़ाई पूरी होने पर काम पर जाना शुरू करते हैं, शादी होती है, बच्चे होते हैं, और हमारी उम्र बढने के साथ-साथ हमारे बच्चों के साथ भी यही क्रम चलता है, बड़े होना, पढना-लिखना, काम पर लगना और फिर शादी हो जाना। बच्चे एक बार सैटल हो जाएं तो हमारा एक सर्कल पूरा हो जाता है। अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी करते हुए हम एक तरह से गोल-गोल घूमते हैं, यह है अपनी ही धुरी पर घूमना। जैसे पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, वैसे ही हम भी जब अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी करते हैं तो हम अपनी धुरी पर घूम रहे होते हैं। लेकिन जब हमारे बच्चे सैटल हो जाते हैं और उनकी शादी भी हो जाती है तो हमारा वह चक्कर भी पूरा हो जाता है जिसकी तुलना हम पृथ्वी के सूर्य के चारों तरफ चक्कर लगाने से कर सकते हैं। वह जीवन का एक चक्र है, जो पूरा हो गया। अपनी धुरी पर घूमते रहना तो तब भी जारी रहता ही है, क्योंकि हम परिवार की जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो पाते। बच्चों के बाद नाती-पोते हमारे नए खिलौने बन जाते हैं और हम उन्हें सहेजने-संवारने में जुट जाते हैं। लेकिन सूर्य के चारों तरफ के पृथ्वी के चक्कर की तुलना वाले अपने चक्कर के बाद हम मानो ठहर जाते हैं और सूर्य के चारों ओर का हमारा अगला चक्कर लगता ही नहीं। यहां फिर सवाल यह है कि हमारे अपने जीवन में हमारे लिए सूर्य के चक्कर का क्या मतलब है और इसका महत्व क्या है?

जब एक बार हमारे अपने बच्चे सैटल हो गए और शादी करके अपने-अपने परिवार में रम गए, तो हमारी पारिवारिक जिम्मेदारियों का एक चरण पूरा हो गया। इस दौरान हमारी उम्र बढ़ी, हमारा अनुभव बढ़ा, हमने कई नए पाठ सीखे, अब दौर है कि हम अपना ज्ञान दुनिया में बांटें। जब हम परिवार के लिए कुछ करते हैं तो हम अपनी धुरी पर घूम रहे हैं और जब हम समाज के लिए कुछ करते हैं तो हम मानो सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने वाला काम कर रहे हैं। पृथ्वी गोल है, यानी हमें इसी गोले में घूमते रहना है, परिवार का भी ध्यान रखना है और समाज को भी कुछ देना है। पृथ्वी एक तरफ 23.5 डिग्री झुकी हुई है, यानी, हमें भी झुक कर चलना है, विनम्र होकर चलना है, सेवा करते हुए चलना है। जब हम ऐसा करते हैं तो हम सच्चे इनसान बन जाते हैं। यही आध्यात्मिकता है। पूजा-पाठ हम करते हों, अच्छा है। भजन-कीर्तन करते हों, अच्छा है। दान-पुण्य करते हों, अच्छा है। लेकिन किसी जरूरतमंद की सहायता कर देना किसी भी पूजा-पाठ, भजन-कीर्तन और साधारण दान-पुण्य से कहीं ज्यादा अच्छा है। हमारे पास दान के लिए धन न हो तो भी कोई बात नहीं, किसी का हौसला बढ़ा देना, किसी की उदासी को खुशी में बदल देना, किसी का मार्गदर्शन कर देना भी सच्ची पूजा है, सच्ची अर्चना है, सच्ची वंदना है। 'सहज संन्यास मिशन' हमें यही सिखाता है कि आध्यात्मिक होने के लिए हमें करुणामयी होना होगा, अपने आसपास के लोगों के प्रति सहृदय होना होगा, उनकी भावनाओं को समझना और उनका आदर करना होगा। अध्यात्म की यह पहली सीढ़ी है। विनम्र हुए बिना, करुणामयी हुए बिना, संवेदनशील हुए बिना हम आध्यात्मिक हो ही नहीं सकते। आध्यात्मिक होने के लिए परिवार छोडने की आवश्यकता नहीं है, काम-धंधा छोडने की आवश्यकता नहीं है, दुनिया छोडने की आवश्यकता नहीं है, बस सच्चा, ईमानदार, विनम्र और दयालु इनसान बनने की जरूरत है।

इनसानियत आ गई तो आध्यात्मिकता आ गई। हम इनसान बन गए तो मानो संत बन गए। कपड़े रंगें या न रंगें, जटा-जूट बढ़ाएं या न बढ़ाएं, सिर मुंडाएं या न मुंडाएं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। हमारी सोच बदली कि नहीं, हमारी नीयत बदली कि नहीं, हमारा व्यवहार बदला कि नहीं, यह पैमाना है आध्यात्मिकता का। आध्यात्मिक हो गए तो संत हो गए। संत हो गए तो दुनिया की सेवा में लग गए। दुनिया की सेवा में लग गए तो सूर्य के चारों ओर के चक्कर वाला चरण पूरा होने लग गया। हम परिवार को समय दें, परिवार के लिए कुछ करें, और लगातार करते रहें, यह हमारी धुरी पर हमारा चक्कर है। हम समाज को समय दें, समाज के लिए कुछ करें, और लगातार करते रहें, यह समाज रूपी सूर्य के चारों ओर हमारा चक्कर है। पृथ्वी गोल है, यानी, न आदि है न अंत। दुनिया गोल है, यानी, यहां भी न आदि है न अंत। हम जब तक हैं, तब तक चक्कर काटते रहें, परिवार के चारों ओर भी और समाज के चारों ओर भी। अपनी जिम्मेदारियां निभाते रहें, अपना योगदान देते रहें तो हम संत हो गए और परमात्मा से जुड़ गए। आध्यात्मिकता का सार बस इतना सा ही है।

गिन्नीज विश्व रिकार्ड विजेता लेखक

संपादक की कलम से

'नई सांस' था कोरोना टीका

कोरोना वैश्विक महामारी से जुड़ी एक खबर हम सभी को चिंतित, व्यथित कर सकती है, लेकिन चिकित्सकों ने इसे घबराहट का मुद्दा न मानने की सलाह दी है। दुनिया में कोरोना महामारी के दौरान ब्रिटेन की कंपनी एस्ट्राजेनेका और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी ने एक टीके का आविष्कार किया था। उस टीके को भारत में 'कोविशील्ड' के नाम से सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया ने बेचा और वितरित किया। चूंकि इतने लंबे अंतराल के बाद ब्रिटिश मीडिया के जरिए यह खुलासा हुआ है कि एस्ट्राजेनेका के टीके से खून में थक्के जम सकते हैं और व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ सकता है। कंपनी ने अदालत में यह स्वीकार भी किया है, लेकिन इसे 'दुर्लभ प्रभाव' भी माना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट 2021 में आई थी, जिसका निष्कर्ष था कि कोरोना टीके से 10,000 में से मात्र एक व्यक्ति ही 'साइड इफेक्ट' का शिकार होता है। खबर इसलिए चिंतित करती है, क्योंकि भारत में सर्वाधिक 175 करोड़ खुराकें 'कोविशील्ड' टीके की दी गई थीं और 36.39 करोड़ खुराकें 'कोवैक्सीन' टीके की दी गईं। इस टीके के निर्माण में भारत सरकार की भी हिस्सेदारी है। बहरहाल ब्रिटेन में कोरोना टीके के दुष्प्रभावों के मद्देनजर 163 लोगों को मुआवजा दिया गया। उनमें से 158 लोगों ने एस्ट्राजेनेका का टीका लगवाया था। कोरोना-काल में टीकाकरण ने दुनिया में 60 लाख से अधिक बीमारों को नई जिंदगी दी और भारत में करीब 34 लाख संक्रमितों को 'नई सांस' दी थी। भारत जैसे घनी और संकरी आबादी वाले देश में यह डाटा बेहद महत्वपूर्ण और मानवीय माना जा सकता है।

भारत में 220 करोड़ से ज्यादा खुराकें दी गईं। उनमें से 254 लोगों पर ही टीके के दुष्प्रभाव सामने आए, लिहाजा भारत में टीके का उलटा असर 0.00001 फीसदी ही रहा। चिकित्सकों का भी कहना है कि टीके से औसतन 10 लाख लोगों में से जानलेवा जोखिम मात्र एक व्यक्ति को ही देखा गया, जबकि टीके ने महामारी की घातकता 80-90 फीसदी तक कम की। रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई। दरअसल थक्का जमने की बीमारी को मेडिकल भाषा में 'टीटीएस सिंड्रोम' कहते हैं, जो करीब 100 साल पुराना है। दिल का अचानक दौरा पडना, अचानक अचेत होकर जमीन पर गिर जाना, हार्ट अटैक से मौत हो जाना आदि कोरोना टीका लगाने से पहले भी मौजूद थे। यदि 2022 में, कोरोना के चरम के ऐन बाद, हार्ट अटैक से 32,410 अचानक मौतें हुईं, तो 2019 से पहले भी 24-25,000 ऐसी ही मौतें हुई थीं। चिकित्सकों का सवाल है कि वे मौतें क्यों हुईं? तब तो कोरोना महामारी नहीं थी? लिहाजा शोधरत चिकित्सकों की स्थापना है कि ऐसा कोई वैज्ञानिक और क्लीनिकल साक्ष्य नहीं है, जो कोरोना टीके का सीधा संबंध मौत के साथ साबित करता हो। ब्रिटिश अदालत में 51 केस एस्ट्राजेनेका के खिलाफ दर्ज किए गए। मुख्य रूप से जेमी स्कॉट अदालत गए और टीके से पीड़ित लोगों ने कंपनी से 1000 करोड़ रुपए तक के मुआवजे मांगे। करीब 20 देशों ने एस्ट्राजेनेका के टीके पर प्रतिबंध लगा दिया, लेकिन ये सभी 'अद्धसत्य' ही थे। जब दुनिया में कोरोना महामारी फैली थी, तब हाहाकार यही था कि किस तरह मनुष्य को बचाया जाए? लोग संक्रमण, ऑक्सीजन की कमी, सांस की निरंतरता टूटने, फेफड़ों के फेल हो जाने के कारण मर रहे थे।

शमशान में जगह कम पड़ी, तो लाशों को नदी में बहा दिया गया। यदि किसी का संक्रमण सामने आया, तो यह निश्चित नहीं था कि वह जिंदा रहेगा या नहीं। भारत में कोरोना वायरस अब भी मौजूद है, क्योंकि एक माह में औसतन 3000 संक्रमित मामले दर्ज किए जा रहे हैं। विश्व में कोरोना महामारी से करीब 70 लाख मौतें हुईं, लेकिन आज हम अपेक्षाकृत आश्वस्त हैं। हमने टीकाकरण कराया है या हम संक्रमित हो चुके हैं। दोनों ही स्थितियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता हमारे भीतर पर्याप्त है। हमें घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि डॉक्टरों के निष्कर्ष हैं कि टीके के दुष्प्रभाव अधिकतम 6 महीने के दौरान सामने आ जाते हैं, जबकि कोरोना खत्म हुए और टीकाकरण का अभियान सम्पन्न हुए 2 साल से अधिक का समय गुजर चुका है।

राय

नई शक्ल-सूरत की कांग्रेस

हिमाचल में कांग्रेस बदल रही है और यह कोशिश आलाकमान का सजदा कर रही है। चुनावी परिदृश्य में कांग्रेस खुद से संघर्ष करती हुई यह बताना चाहती है कि उसे बाह्य स्थिति से कहीं अधिक आंतरिक सत्ता की जरूरत है। जरूरत आलाकमान के फरमान को मोहरों पर खेल रही है और जहां मकसद जीत-हार से कहीं आगे नए स्थापत्य में खुद के गुमशुदा हालात में खोजने कहीं अधिक है। इसलिए जिन्हें आश्चर्य है कि अचानक पूर्व केंद्रीय मंत्री आनंद शर्मा अचानक कहां से कांगड़ा के उजड़े चमन में नई बहारों के लिए उतार दिए गए, वे गलत सोच रहे हैं। दरअसल यह नए लफ्जों, नए वादों और नई शक्ल-सूरत में प्रदेश की पुरानी कांग्रेस को संबोधित करने का प्रयास है। जिस पार्टी को छह विधायकों के रुखसत होने पर भी आत्मविश्लेषण की जरूरत नहीं, वह अब चमत्कार पर विश्वास कर सकती है। इसलिए जिस सर्वेक्षण का जिक्र खुद में अद्भुत है, वहां चुनावी उम्मीदवारों के चमत्कार तो पूजे जाएंगे। बहरहाल, कांग्रेस की खाल से चस्पां रहस्य किसी तरह उखड़ गया और अनुराग ठाकुर के सामने सतपाल रायजादा और कांगड़ा से आनंद शर्मा सामने आ गए। इससे पूर्व मंडी से सरकार के मंत्री विक्रमादित्य सिंह और शिमला से विनोद सुल्तानपुरी अपनी दोहरी भूमिकाओं में संसद की लड़ाई में पुश्तैनी वजूद तलाश रहे हैं। हालांकि कांगड़ा और हमीरपुर में भी कांग्रेस की गुजारिश अपने ही विधायकों से थी, लेकिन न तो उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने लोकसभा चुनाव का दामन थामा और न ही नगरोटा बगवां के विधायक आरएस बाली ने दिल्ली के संपर्कों में स्थायी भूमिका तराशी।

ऐसे में अगर कांग्रेस के चयन पर जनता की मोहर लग जाए, तो पूरी पार्टी बदल जाएगी, लेकिन जीत-हार के फासले कुछ शक्तियों को क्षीण भी कर सकते हैं। बतौर सांसद व केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर के झंडे बुलंद इसलिए भी लगते हैं, क्योंकि वहां उपलब्धियों, संपर्कों और निरंतरता की बुलंदी है। वह एकमात्र ऐसे हिमाचली नेता बन गए हैं, जिसके लिए चुनावी फील्ड पहले से तय है। कुछ इसी तरह का आभास मंडी में विक्रमादित्य की साख और विरासत से जुड़ता है, लिहाजा वहां वीरभद्र सिंह की कांग्रेस का प्रभाव बरकरार है। हिमाचल में नई कांग्रेस की जीत-हार का सारा दारोमदार अब आनंद शर्मा की उम्मीदवारी पर है। इस चयन में कई चयन व इतिहास हैं। हिमाचल से आनंद शर्मा के रिश्ते व उनके अनुराग में प्रदेश में केंद्र के उपकार देखे जाएंगे। भले ही शिमला में क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय व नादौन में प्रस्तावित स्पाइस पार्क की चर्चाओं में यह नेता कुछ काम करता हुआ दिखाई देता है, लेकिन जिस दौर में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार का औद्योगिक पैकेज रद्द हुआ था, तब मनमोहन सिंह के मंत्रिमंडल में आनंद शर्मा वाणिज्य मंत्री थे।

जाहिर है उनके मंत्री पद की तारीफों में हिमाचल ने जो सपने देखे थे, वे चुनावी यथार्थ में अब मुद्दे पैदा करेंगे। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के दावों का दम कांगड़ा में जिस शिद्दत से आनंद शर्मा को उतार रहा है, उससे यह तो पता चल जाता है कि हाल फिलहाल पार्टी को सत्ता में पहुंचाने वाला यह जिला अपने स्थानीय नेताओं का प्रभाव व प्रभुत्व हार रहा है। जिस कद पर आनंद शर्मा का अवतरण कांगड़ा में हो रहा है, वहां कांगड़ा-चंबा के कई स्थानीय नेता फिसड्डी ही साबित हो रहे हैं। बहरहाल अब भाजपा के लिए अपने नए उम्मीदवार राजीव भारद्वाज के सामने चुनाव की रोचकता परवान चढ़ती हुई प्रतीत हो रही है। उम्मीदवारों के चयन में कांगड़ा को पिछलग्गू बनाकर कांग्रेस कौनसा मंतव्य जीतना चाहती है, यह इस चुनाव का निष्कर्ष होगा।

गिरगिट के रंग, नेकी के संग

बदी पर नेकी की, झूठ पर सच की और बुराई पर भलाई की जीत की बात ही पढ़ते आए थे। जब से हमने होश संभाली, तभी से पाठशाला को मन्दिर सम माना जाता था, और गुरु वन्दना का तो बाकायदा एक दिन निर्धारित होता ही था। देखते ही देखते जब हमारी उम्र ने गुजरने की रफ्तार पकड़ी तो ये सब विश्वास, मूल्य और मान्यताएं भी अपना रूप बदल गयीं। पहले सुना था कि केवल गिरगिट ही रंग बदलता है, लेकिन अब अगर हर मौसम, हर दिन या हर पल रंग न बदल पायें तो उसके लिए कहोगे कि जा रे जमाना। जमाना बदलता गया, पहले नेकी कर के दरिया में इसलिए डाल देते होंगे कि यह बह कर घाट-घाट से गुजरे और नेक बन्दों से ये दुनिया इतनी सुगन्धित हो जाए कि इत्र फुलेल वालों को भी अपनी दुकानें बढ़ानी पड़ें। सुनते थे जो बेचते थे दर्दे दिल, वे दुकान अपनी बढ़ा गए। लेकिन अब नेक बंदों को दिल टूटने का यह मर्ज कैसा? नेकी का माहौल था, हर आदमी दूसरे से बढ़ कर नेकी करने पर तुला हुआ था। ऐसे में बाहरी खुशबू की तलाश कौन करता? लेकिन जा रे जमाना, अब खुशबूदार आदमियों ने इत्र फुलेल को विदा दे दी तो नेकी ने भी कोरोना के इस ताजा बदले रूप की तरह रंग बदल लिया। सुना है यह कोरोना पहले से सत्रह प्रतिशत अधिक तेजी से फैलता है। इसीलिए जमाने की बदलती चाल ने नेकी के नाम पर नई पंगत सजानी शुरू की तो उसने भी सत्रह प्रतिशत नहीं, सौ प्रतिशत अधिक तेज चाल पकड़ ली। पंजाब में त्रिया चरित्र के बारे में एक कहावत है, 'रोती यारों को, ले ले नाम अपने भाइयों का।' नाम तो अभी भी नेकी का ही लिया जाता है।

नहीं तो नेक बन्दों के लेबुल कम न पड़ जाते? लेकिन बंदा-परवर, अब नेकी करके आज के नेक बंदे दरिया में डालने नहीं जाते, उसे अपने ही घर के पिछवाड़े में बने कुएं में डालते चले जाते हैं। देश में लोगों के लिए कुएं खुदवाने की परम्परा बहुत पुरानी है। धर्मी-कर्मी लोग कुएं खुदवाते थे, प्यासे जनों की प्यास बुझाने के लिए। सत्य कर्म का यह बोलबाला था, साहिब, कि प्यासे कम और कुएं अधिक हो गए थे। सब को अपने पितरों की चिन्ता थी। इस धरती पर कुआं खुदवा कर प्यासों को पानी मिलेगा या दोगे तो ऊपर स्वर्ग में तुम्हारे पितरों को अमृत ही नहीं मिलेगा, वे उसे अधिकार से ले लेंगे, कहते थे। लेकिन जमाना बदल गया बन्धु! धनी मानी लोगों के घरों के पिछवाड़े कुएं तो आज भी खुदवाए जाते हैं, लेकिन वे चलते कुएं नहीं कि जहां राहगीर अपनी प्यास बुझा लें। देखते ही देखते ये कुएं अन्धे हो गए। जमाना राहगीरों को पानी पिलाने का नहीं, रहजनों को चंग पर चढ़ाने का है। किसी जमाने में राजा महाराजा अपना और अपने पूर्वजों का खजाना अनन्त काल तक सुरक्षित रखने के लिए तिलिस्म बांधते थे। तिलिस्म की कहानियां तभी प्रचलित हुई थीं। देवकी नन्दन खत्री की चन्द्रकांता और चन्द्रकांता सन्तति उन्हीं दिनों में लिखे गए थे। लेकिन खुशबुओं के जमाने लद गए।

लोकतंत्र ने गद्दियों पर ऐसे महाराजा पेश कर दिए जो उम्र भर के लिए राजकाज अपने नाम ठेके पर लिखवा लेना चाहते हैं। नेकी के दरिया सूख कर बदी के रेगिस्तान बन गए, जहां चलते अन्धड़ों में जन-सेवकों ने शुतुरमुर्गों की तरह अपने मुंह छिपा लिए। अब जन सेवा बन गई परिवार सेवा। भाई भतीजावाद कल्याण का पर्याय बन गया। आदर्शों के तिलिस्म टूटे और बड़े आदमियों के पिछवाड़े ऐसे कुएं बन गए कि जिनके पास कोई आम जन फटक भी न पाए। पहले उन कुओं पर जन कल्याण और सर्व-समर्पण के नाम पट्ट लगे रहते थे। अब तो परिवार जनों और व्यावसायिक घरानों ने अपने ब्रांड लगा दिए। पद प्रतिष्ठा के ऐसे अंधे कुएं बनाओ जो आपके नाती-पोतों के लिए खुलें, बदलते युग की आवाज बनी।

सुरेश सेठ

विचार

आज पंचायतों को जुर्माना लगाने की शक्तियां देने के अलावा जिला भर से एक आवारा पशु मुक्त पंचायत को पांच लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि का प्रावधान करना भी एक सराहनीय कदम है। गौसदनों, गौशालाओं और पशुधन की देखभाल का जिम्मा उठाने वाले लोगों को भी सरकारी स्तर पर सम्मानित करना, प्रोत्साहन देना और पुरस्कृत किया जाना भी जरूरी है'

निराश्रित पशुधन सडक़ों पर क्यों?

आजकल हिमाचल की सडक़ों पर जाम की स्थिति बनी हुई है और इसकी बड़ी वजह सडक़ों एवं पुलों पर निराश्रित पशुओं की टोलियों के झुंड हैं। अब तो जैसे हिमाचली घरों से पशुधन की पूर्णतया विदाई ही कर दी गई है और ऐसी कोई पूर्णकालिक सरकारी व्यवस्था नहीं है जो इन बेसहारा पशुओं को ठौर ठिकाना मुहैय्या करवा सके। कहीं कहीं दानी सज्जनों एवं गैर सरकारी संगठनों के सद्प्रयासों से छोटी छोटी गौशालाएं संचालित की भी जा रही हैं, लेकिन एक विशाल पशुधन की देखभाल प्रभु भरोसे ही चल रही है। ये पशुधन न केवल निराश्रित हैं, बल्कि कई पशु घायल एवं बीमार अवस्था में लाचार सडक़ों पर घूमते मिल जाएंगे। यहां विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाने के उद्देश्यों पर भी सवालिया निशान उठते हैं जिसमें पशु स्वास्थ्य, उनकी देखभाल, पशु क्रूरता को रोकना, पशुओं के स्वास्थ्य की देखभाल करने जैसी बातें तो की जाती हैं, लेकिन सवाल यह भी उठता है कि क्या हमारे पशु चिकित्सालय एवं चिकित्सक मात्र उनके यहां आने वाले पशुओं की नियमित जांच, टीकाकरण के लिए ही जिम्मेदार हैं अथवा निराश्रित पशुओं की चिकित्सा जांच को भी अपने काम के दायरे में लेंगे।

हिमाचल प्रदेश जैसे पहाड़ी राज्य में जहां आज से 30-35 वर्ष पूर्व जो पशु किसी भी कार्य के उपयुक्त नहीं होता था उसकी भी पुत्रवत देखभाल एवं सेवा सुश्रुषा की जाती थी। लेकिन आज परिस्थितियां बिल्कुल विपरीत और दुर्भाग्यपूर्ण रूप ले चुकी हैं। जगह-जगह निराश्रित घूमते निरीह, असहाय, लाचार, बेजुबान पशुओं के झुंड बाजारों, सडक़ों में गंदगी, प्लास्टिक व अभक्षणिय चीजों पर जीवित तथा निर्भर रहकर हमारे समाज में व्याप्त मनुष्य की स्वेच्छाचारिता और स्वार्थीपन को सरेराह प्रदर्शित करते घूम रहे हैं। जिन खेतों-खलिहानों पर कभी बाड़ नहीं होती थी वहां आज आवारा घूमते पशुओं के चलते लहलहाती फसलें गायब हो चुकी हैं, सारा दोष कमोबेश हमारा ही है। जो पशुधन कभी ग्रामीण आर्थिकी की रीढ़ हुआ करता था वही पशुधन आज दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर है। खेतीबाड़ी, बाग-बगीचों, घरेलू सब्जियां तैयार करना तथा घर परिवारों को पहुंचने वाले लाभों से यदि आज हम वंचित हुए जा रहे हैं तो कदाचित दोषी भी हम स्वयं ही हैं। आज हम ऑर्गेनिक सब्जियों, दालों की मांग कर रहे हैं। स्वास्थ्यवर्धक एवं पौष्टिक दूध की इच्छा रखते हैं, लेकिन इन चीजों को उपलब्ध करवाने की क्षमता रखने वाले पशुधन को समुचित ठौर-ठिकाना दे पाने में हम नितांत अक्षम हो चुके हैं। हिमाचल प्रदेश में इस समय कुल 6 गौ अभयारण्य हैं तो 3 बड़े गौ सदन भी संचालित किए जा रहे हैं। मार्च 2019 में गौ सेवा आयोग का गठन किया गया था। इसके अलावा राज्य पशु कल्याण बोर्ड अलग से है। वहीं सरकार मार्च 2018 से शराब की प्रति बोतल एक रुपए का गौवंश उपकर लगाकर और मंदिर ट्रस्टों की आय का 15 फीसदी राशि गौ सेवा आयोग को उपलब्ध करवा रही है लेकिन विभाग और संसाधनों के होने के बावजूद यदि पशुधन सडक़ों पर है तो राज्य सरकार को निराश्रित पशुओं के समुचित ठौर ठिकाने में मिल रही विफलता के कारणों पर विचार करना चाहिए। 2019 की पशुधन गणना के अनुसार हिमाचल प्रदेश की कुल पशुधन आबादी 44.13 लाख थी, जिसमें से 18.28 लाख गाय एवं 6.47 लाख भैंसे हैं। 1948 में हिमाचल प्रदेश में जहां मात्र 9 पशु चिकित्सालय थे तो वहीं 14 फरवरी 2024 की स्थिति के अनुसार आज प्रदेश में एक राज्य स्तरीय पशु चिकित्सालय के अलावा वेटरिनरी पॉलीक्लिनिक के 9, उपमंडलीय पशु चिकित्सालय 60, पशु चिकित्सालय 362, पशु औषधालय 1762 के अलावा मुख्यमंत्री आरोग्य पशुधन योजना के अंतर्गत 1251 पशु औषधालय भी सेवारत हैं। समय-समय पर पशुपालन विभाग के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने तथा विभागीय क्रियाकलापों की जानकारी पशुपालकों तक पहुंचाने के लिए कई कार्य योजनाओं को विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारी अमलीजामा पहनाने में जुटे हुए हैं, लेकिन इस राह में कुछ मुश्किलें भी हैं। 25 सितंबर 2023 की स्थिति के अनुसार पशुपालन विभाग में 40 श्रेणियों के लिए कुल 7757 पद स्वीकृत थे जिनमें से 5188 भरे हुए थे तो 2569 पद रिक्त चल रहे हैं। आवश्यकता है कि हिमाचल प्रदेश सरकार चुनावों के बाद प्राथमिकता के आधार पर इन पदों को भरे, इससे जहां पढ़े-लिखे युवाओं को रोजगार मिलेगा तो वहीं विभागीय कामकाज की रफ्तार को भी गति मिलेगी। भारतीय संविधान निराश्रित जानवरों की सुरक्षा के लिए विशिष्ट कानूनों का प्रावधान करता है और इसके अनुसार, भारत के नागरिक के रूप में इनकी रक्षा और पोषण करना हमारा कत्र्तव्य है क्योंकि वे भी जीवित प्राणी हैं।

निराश्रित पशुओं को लेकर वर्तमान में 186 गैर सरकारी संस्थाएं एवं न्यास इस दिशा में कार्यरत हैं जिन्हें राज्य सरकार अनुदान भी दे रही है, परंतु बहुतायत में समस्या बरकरार है। प्रकृति व पर्यावरण में संतुलन साधने वाले ऐसे पशुओं से मित्रता व प्रेम भाव प्रदर्शित करना आज समय की जरूरत बन चुका है। सरकार ने गैर सरकारी संस्थाओं या पशुमित्रों, जो गोशालाएं, गौसदन स्थापित करना चाहते हैं, को गौशालाओं के निर्माण और चारा खरीद हेतु आर्थिक सहायता की व्यवस्था भी की है। आज पंचायतों को जुर्माना लगाने की शक्तियां देने के अलावा जिला भर से एक आवारा पशु मुक्त पंचायत को पांच लाख रुपए की प्रोत्साहन राशि का प्रावधान करना भी एक सराहनीय कदम है। गौसदनों, गौशालाओं और पशुधन की देखभाल का जिम्मा उठाने वाले लोगों को भी सरकारी स्तर पर सम्मानित करना, प्रोत्साहन देना और पुरस्कृत किया जाना भी जरूरी है। इससे कुछ हद तक निराश्रित पशुओं की समस्या से निजात पाई जा सकती है। वास्तव में आज पशुओं से मित्रता व उनकी देखभाल को जन आंदोलन बनाना समय की प्रमुख मांग बन चुका है।

अनुज आचार्य

क्या होता है फॉर्म 16 ? रिटर्न फाइल करने के लिए क्यों है फॉर्म-16 जरूरी

परिवहन विशेष न्यूज

टैक्सपेयर को हर साल इनकम टैक्स रिटर्न (ITR) फाइल करना होता है। सैलरीड पर्सन को रिटर्न फाइल करते समय फॉर्म-16 (Form 16) का होना जरूरी है। फॉर्म-16 एक जरूरी डॉक्यूमेंट है। यह फॉर्म कंपनी द्वारा जारी किया जाता है। इसमें कर्मचारी की सैलरी से लेकर बाकी सभी अलाउंस की जानकारी होती है। बिना इस फॉर्म के रिटर्न फाइल नहीं करना चाहिए।

दिल्ली। इनकम टैक्स रिटर्न (ITR) भरने का समय आ गया है। आईटीआर फाइल करते समय सैलरीड पर्सन के लिए फॉर्म 16 (Form 16) बहुत जरूरी होता है। एक्सपर्ट भी सलाह देते हैं कि करदाता को बिना फॉर्म-16 के रिटर्न फाइल नहीं करना चाहिए।

बता दें कि फॉर्म-16 टीडीएस सर्टिफिकेट (TDS Certificate) का भी काम करता है। आयकर नियमों के अनुसार सभी कंपनियों को अपने कर्मचारी के लिए फॉर्म-16 जारी करना अनिवार्य है। कंपनियों को यह फॉर्म आयकर विभाग द्वारा दिए गए समय के भीतर ही जारी करना होता है।

इन कर्मचारी के लिए जारी होता है Form 16

ऐसे में अब सवाल है कि यह फॉर्म-16 किन कर्मचरियों के लिए जारी किया जाता है। आयकर विभाग के अनुसार हर साल 15 जून से पहले कंपनियों को यह फॉर्म जारी करना होता है। कंपनी यह फॉर्म उन कर्मचारियों के लिए जारी करती है जो वर्तमान में कंपनी में काम कर रहा है या फिर पिछले कारोबारी साल में काम कर चुका हैं।

Form 16 क्या है? (What is Form-16)

फॉर्म-16 में कर्मचारी के सैलरी से काटे गए टैक्स और टैक्स छूट की जानकारी होती है। यह जानकारी पूरे एक कारोबारी साल की होती है। इस फॉर्म को दो हिस्से होते हैं।

फॉर्म के पार्ट A में वित्त वर्ष में काटे गए टीडीएस की जानकारी के साथ कर्मचारी का पैन और कंपनी का टैन नंबर होता है। वहीं, पार्ट B में कर्मचारी की सैलरी, अलाउंस, एचआरए और स्पेशल अलाउंस से संबंधित जानकारी होती है। इसमें कंपनी की तरफ से मिल रही सुविधाओं की भी जानकारी होती है।

अडानी ग्रुप दो कंपनियों ने पेश किए चौथी तिमाही के नतीजे, जानिए कैसा रहा परफॉर्मेंस

अदाणी ग्रुप की दो कंपनियों Aadni Port और Adani Enterprises ने गुरुवार को चौथी तिमाही के नतीजे पेश किए। अदाणी पोर्ट ने बताया कि कंपनी का मुनाफा इस वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही के अंत तक 74 फीसदी बढ़ गया। वहीं अदाणी समूह की दूसरी कंपनी Adani Enterprises को मार्च तिमाही में 627 करोड़ रुपये का घाटा हुआ।

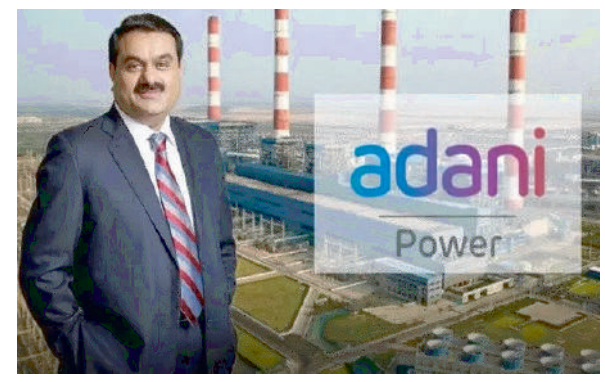

नईदिल्ली। अदाणी ग्रुप की दो कंपनियों अदाणी पोर्ट (Aadni Port) और अदाणी एंटरप्राइजेज (Adani Enterprises) ने वित्त वर्ष 2024 के चौथी तिमाही के नतीजों का ऐलान किया है।

अदाणी पोर्ट ने बताया कि कंपनी को मार्च तिमाही में कंपनी का मुनाफा 74 फीसदी तक बढ़ गया है। वहीं दूसरी तरफ अदाणी एंटरप्राइजेज तो चौथी तिमाही में 627 करोड़ रुपये का घाटा हुआ है।

Aadni Port के चौथी तिमाही के नतीजे

अदाणी पोर्ट को देश की सबसे बड़ी पोर्ट कंपनी माना जाता है। अदाणी पोर्ट ने अपने तिमाही नतीजों में बताया कि वित्त वर्ष 2024 के जनवरी से मार्च तिमाही में शानदार प्रदर्शन रहा है। कंपनी ने तिमाही नतीजों के साथ शेयरधारकों के लिए डिविडेंड का भी ऐलान किया है।

कंपनी ने बताया कि उनके नेट प्रॉफिट में सालाना आधार पर 76.2 फीसदी की ग्रोथ देखने को मिली है। बता दें कि अदाणी ग्रुप में अदाणी पोर्ट की 70 फीसदी हिस्सेदारी है। मार्च तिमाही में कंपनी का कंसोलिडेटेड प्रॉफिट 2040 करोड़ रुपये रहा जो एक साल पहले इसी तिमाही में 1158 करोड़ रुपये था।

कंपनी के रेवेन्यू में भी सालाना आधार पर करीब 19 फीसदी की ग्रोथ आई है। मार्च तिमाही में कंपनी का राजस्व 6897 करोड़ रुपये रहा जो पिछले वित्त वर्ष में 5797 करोड़ रुपये था।

अदाणी पोर्ट का EBITDA यानी कामकाजी मुनाफा मार्च तिमाही में 4045 करोड़ रुपये रहा।

Adani Enterprises के चौथी तिमाही के नतीजे

अदाणी एंटरप्राइजेज ने मार्च तिमाही के नतीजों में बताया कि उसे इस तिमाही नुकसान का सामना करना पड़ा है। कंपनी का मुनाफा मार्च तिमाही में 781 करोड़ रुपये से गिरकर 352 करोड़ रुपये हो गया है। इसका मतलब है कि कंपनी को एक तिमाही में 627 करोड़ रुपये का घाटा हुआ।

इसके अलावा कंपनी के शेयर में भी गिरावट देखने को मिली है। कंपनी ने शेयर से रिकवरी के लिए 1.39 रुपये प्रति शेयर का लाभांश देने का ऐलान किया है।

फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों को यथावत रखा, बैठक ने दिये कई संकेत

US Fed Policy अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने बुधवार को ब्याज दरों को स्थिर रखने का फैसला लिया है। फेड ने मुद्रास्फीति दरों पर विराम लगाते हुए अर्थव्यवस्था में अधिक संतुलन की दिशा में रुकावट की आशंका जताई। फेड ने बताया कि पिछले वर्ष मुद्रास्फीति कम हो गई। फेड के नतीजे के बाद अमेरिकी शेयरों की गिरावट कम हुई और डालर अन्य मुद्राओं की तुलना में गिर गया।

नईदिल्ली। अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने बुधवार को ब्याज दरों को यथावत रखा और संकेत दिया कि वह अभी भी उधार लेने की लागत में अंतिम कटौती की ओर बढ़ रहा है। इसने हालिया मुद्रास्फीति दरों पर विराम लगाते हुए अर्थव्यवस्था में अधिक संतुलन की दिशा में रुकावट की आशंका जताई।

न्यूज एजेंसी रॉयटर्स ने बताया कि फेडरल रिजर्व का नवीनतम वक्तव्य दो दिवसीय बैठक के अंत में जारी किया गया है। इसमें इसके आर्थिक मूल्यांकन और नीतिगत दिशा-निर्देश के प्रमुख तत्वों को बरकरार रखा गया है।

इसमें कहा गया है कि पिछले वर्ष मुद्रास्फीति कम हो गई। वक्तव्य में ऐसी परिस्थितियों में ब्याज दरों की चर्चा की गई है, जिनके तहत उधार लेने की लागत कम की जा सकती है।

फेडरल रिजर्व का वक्तव्य जारी होने के बाद एक ओर जहां अमेरिकी शेयरों की गिरावट कम हुई, वहीं दूसरी तरफ डालर अन्य मुद्राओं की तुलना में गिर गया।

गोदरेज ग्रुप के बंटवारे के बाद कैसा है कंपनी के शेयरों का हाल, किस स्टॉक में आई तेजी और कौन-सा शेयर फिसला

गोदरेज ग्रुप अभी चर्चा में बना है। बता दें कि गोदरेज ग्रुप 127 साल पुराना है। दरअसल इस ग्रुप को परिवार के दो वर्गों में बांटा गया है। ग्रुप के बंटवारे होने के बाद इनके लिस्टिड कंपनी के शेयर में मिश्रित रुझान देखा गया। चलिए जानते हैं कि आज ग्रुप के किस कंपनी के शेयरों में तेजी आई है और किस कंपनी के शेयरों में गिरावट आई है।

नईदिल्ली। गोदरेज ग्रुप जो कि 127 साल पुराना ग्रुप है वह दो शाखा में बंट रही है। ग्रुप के इस बंटवारे के बाद आज सुबह के कारोबार में गोदरेज समूह की कंपनियों के शेयरों में मिश्रित रुझान देखा गया।

गोदरेज ग्रुप को संस्थापक परिवार की दो शाखाओं के बीच विभाजित किया गया है। इसमें एक तरफ आदि गोदरेज और उनके भाई नादिर और दूसरी तरफ उनके चचेरे भाई जमशेद गोदरेज और स्मिता गोदरेज कृष्णा हैं।

कैसा है शेयर का हाल

आज बीएसई पर गोदरेज इंडस्ट्रीज का शेयर 8.60 प्रतिशत गिरकर 877.95 रुपये पर आ गया। गोदरेज प्रॉपर्टीज के शेयर 6.25 फीसदी गिरकर 2,482.90 रुपये पर आ गया।

शुरुआती कारोबार के दौरान लगभग 9 प्रतिशत की तेजी के बावजूद एस्टेक लाइफसाइंसेज का स्टॉक भी 2.15 प्रतिशत गिरकर 1,259.85 रुपये पर आ गया।

हालांकि, गोदरेज एग्रोवेट के शेयर 5.58 प्रतिशत उछलकर 575.05 रुपये पर और गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स 2.82 प्रतिशत चढ़कर 1,253.95 रुपये पर पहुंच गए।

किसके पास है कौन-सी कंपनी

गोदरेज ग्रुप का संस्थापक परिवार, जो साबुन और घरेलू उपकरणों से लेकर रियल एस्टेट तक फैला हुआ है, समूह को विभाजित करने के लिए एक समझौते पर पहुंच गया है। इसमें आदि गोदरेज और उनके भाई नादिर ने गोदरेज इंडस्ट्रीज को अपने पास रखा है, जिसमें पांच सूचीबद्ध कंपनियां हैं, जबकि चचेरे भाई जमशेद और स्मिता असूचीबद्ध हो गए हैं।

गोदरेज एंड बॉयस और उसके सहयोगियों के साथ-साथ एक लैंड बैंक, जिसमें मुंबई में प्रमुख संपत्ति भी शामिल है। आदि गोदरेज और उनके भाई नादिर के पास गोदरेज इंडस्ट्रीज और गोदरेज प्रॉपर्टीज सहित पांच सूचीबद्ध कंपनियां होंगी, जबकि चचेरे भाई जमशेद और स्मिता को गैर-सूचीबद्ध गोदरेज एंड बॉयस और उसके सहयोगियों के साथ-साथ मुंबई में एक प्रमुख संपत्ति सहित एक भूमि बैंक मिलेगा।

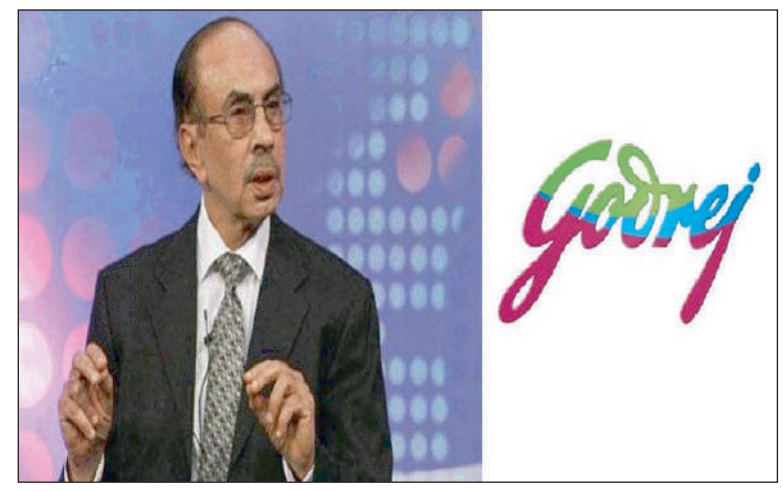

गोदरेज एंटरप्राइजेज ग्रुप - जिसमें गोदरेज एंड बॉयस और उसके सहयोगी शामिल हैं, जिनकी एयरोस्पेस और विमानन से लेकर रक्षा, फर्नीचर और आईटी सॉफ्टवेयर तक कई उद्योगों में मौजूदगी है - के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के रूप में जमशेद गोदरेज द्वारा नियंत्रित किया जाएगा। उनकी बहन स्मिता की 42 वर्षीय बेटी न्यारिका होल्कर कार्यकारी निदेशक होंगी।

इसके अलावा यह परिवार की लैंड बैंक को नियंत्रित करेंगी। इनके पास मुंबई में 3,400 एकड़लैंड बैंक है। गोदरेज इंडस्ट्रीज ग्रुप में सूचीबद्ध कंपनियां शामिल हैं। गोदरेज इंडस्ट्रीज, गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स, गोदरेज प्रॉपर्टीज, गोदरेज एग्रोवेट और एस्टेक लाइफसाइंसेज के अध्यक्ष के रूप में नादिर गोदरेज होंगे और उनका नियंत्रण आदि, नादिर और उनके तत्काल परिवारों द्वारा किया जाएगा।

भारत को विकास की गति बनाए रखने के लिए बुजुर्गों को स्वास्थ्य बीमा के दायरे में लाने की जरूरत : एडीबी रिपोर्ट

एडीबी की एक रिपोर्ट में पता चला है कि वृद्ध लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत एशिया प्रशांत देशों में सबसे निचले देशों में से एक है और तेजी से बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का विस्तार करने की जरूरत है एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

नईदिल्ली। एडीबी की एक रिपोर्ट में जानकारी सामने आई है कि वृद्ध लोगों के लिए स्वास्थ्य बीमा के मामले में भारत एशिया प्रशांत देशों में सबसे निचले देशों में से एक है और तेजी से बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने और विकास की गति को बनाए रखने के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज का विस्तार करने की जरूरत है, एक रिपोर्ट में यह बात सामने आई है।

एडीबी द्वारा तैयार 'एजिंग वेल इन एशिया' शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में कहा गया है कि दक्षिण कोरिया और थाईलैंड ने सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज हासिल कर लिया है, जबकि अन्य देश पीछे हैं, जहां भारत में वृद्ध लोगों के बीच सबसे कम 21 प्रतिशत स्वास्थ्य बीमा कवरेज है।

कैशलेस स्वास्थ्य सेवा

हालांकि, एडीबी के वरिष्ठ अर्थशास्त्री एइको किक्कावा ने यहां कहा कि आयुष्मान भारत जैसी योजनाएं जो आबादी के निचले हिस्से को कैशलेस स्वास्थ्य सेवा देती हैं, उनके लॉन्च के बाद से स्वास्थ्य कवरेज में सुधार हुआ है।

उन्होंने कहा कि इसे और विस्तारित करने से स्थिति में सुधार होगा और 60 वर्ष से अधिक आयु के लोग अर्थव्यवस्था के लिए अधिक उत्पादक बनेंगे, उन्होंने कहा, ऐसे देशों के लिए चांदी का लाभांश अधिक हो सकता है जो उन्हें लाभप्रद रूप से रोजगार देते हैं।

उन्होंने कहा, सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज हासिल करने के अलावा, वृद्ध लोगों की शारीरिक और कार्यात्मक क्षमता को अनुकूलित करने वाली आवश्यक सेवाओं और हस्तक्षेपों का विस्तार करना भी महत्वपूर्ण है।

इसमें कहा गया है कि बांग्लादेश, इंडोनेशिया और भारत में, स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच से वंचित आधे से अधिक लोग निचले दो धन क्विंटल में हैं।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि 2031-40 के दौरान उम्रदराज आबादी के कारण आर्थिक विकास पर प्रभाव भारत के मामले में कम होगा क्योंकि यहां अभी भी युवा आबादी अधिक होगी।

जीडीपी में बढ़ोतरी

रिपोर्ट के अनुसार, विकासशील एशिया और प्रशांत क्षेत्र में 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों की संख्या 2050 तक लगभग दोगुनी होकर 1.2 बिलियन हो जाएगी - या कुल आबादी का लगभग एक चौथाई - जिससे पेंशन और कल्याण कार्यक्रमों साथ ही स्वास्थ्य सेवाएं भी की आवश्यकता काफी बढ़ जाएगी।

एडीबी के मुख्य अर्थशास्त्री अल्बर्ट पार्क ने कहा कि साथ ही, अर्थव्यवस्थाओं के पास वृद्ध लोगों से अतिरिक्त उत्पादकता के रूप में रजत लाभांश पाने का अवसर है, जो क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद को औसतन 0.9 प्रतिशत तक बढ़ा सकता है।

बाजार का विस्तार करने और स्वास्थ्य देखभाल खर्चों से पर्याप्त सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, बीमा नियामक आईआरडीएआई ने हाल ही में स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी खरीदने वाले व्यक्तियों के लिए 65 वर्ष की आयु सीमा हटा दी है। स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को खरीदने पर अधिकतम आयु प्रतिबंध को समाप्त करके, भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) का लक्ष्य एक अधिक समावेशी और सुलभ स्वास्थ्य देखभाल पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है, जिससे अप्रत्याशित चिकित्सा खर्चों के खिलाफ पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

बाजार का विस्तार करने और स्वास्थ्य देखभाल खर्चों से पर्याप्त सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, बीमा नियामक आईआरडीएआई ने हाल ही में स्वास्थ्य बीमा पॉलिसी खरीदने वाले व्यक्तियों के लिए 65 वर्ष की आयु सीमा हटा दी है। स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को खरीदने पर अधिकतम आयु प्रतिबंध को समाप्त करके, भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) का लक्ष्य एक अधिक समावेशी और सुलभ स्वास्थ्य देखभाल पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देना है...

सेवानिवृत्ति के लिए वित्तीय तैयारियों के बारे में बात करते हुए रिपोर्ट में कहा गया है कि यह पूरे क्षेत्र में अलग-अलग है।

इसमें कहा गया है कि किसी व्यक्ति को बुढ़ापे के लिए वित्तीय रूप से तैयार माना जाता है यदि आय, परिसमापन के लिए उपलब्ध संपत्तियों सहित, सेवानिवृत्ति की अपेक्षित अवधि के लिए उपभोग की जरूरतों को पूरा करती है।

एक नव विकसित वित्तीय तैयारी सूचकांक से पता चलता है कि वित्तीय रूप से तैयार लगभग वृद्ध लोगों की हिस्सेदारी - जो सेवानिवृत्ति के 5 साल या उसके आसपास हैं - जापान में 86 प्रतिशत और भारत में 73 प्रतिशत तक है, लेकिन 64 पर कुछ हद तक कम है। चीन में प्रतिशत और कोरिया गणराज्य में 58 प्रतिशत।

यह बताया गया है कि चीन में ग्रामीण-शहरी तैयारियों में व्यापक अंतर है, केवल 44 प्रतिशत ग्रामीण निवासी तैयार हैं, यानी 82 प्रतिशत शहरी निवासियों में से बमुश्किल आधे, जो तैयार हैं। भारत, चीन और दक्षिण कोरिया में, 80-90 प्रतिशत सेवानिवृत्ति के लिए वित्तीय संसाधन निजी आय और संपत्तियों से आते हैं, सार्वजनिक पेंशन या सामाजिक सहायता से नहीं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि 2022 से 2050 तक क्षेत्र में 60 साल की उम्र में जीवन प्रत्याशा महिलाओं के लिए 3.7 साल और पुरुषों के लिए 4.1 साल बढ़ने की उम्मीद है, इससे 60 साल की उम्र में औसत क्षेत्रीय जीवन प्रत्याशा 21.6 से बढ़कर 21.6 हो जाएगी। महिलाओं के लिए 25.3 वर्ष और पुरुषों के लिए 18.2 से 22.3 वर्ष तक।

पार्क ने कहा, एशिया और प्रशांत का तेजी से विकास एक सफलता की कहानी है, लेकिन यह एक बड़े जनसांख्यिकीय बदलाव को भी बढ़ावा दे रहा है और दबाव बढ़ रहा है।

उन्होंने कहा कि सरकारों को अभी से तैयारी करने की जरूरत है, अगर वे इस क्षेत्र के लाखों लोगों को अच्छी उम्र देने में मदद करने में सक्षम हैं। नीतियों को स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल और सेवानिवृत्ति के लिए वित्तीय तैयारियों में आजीवन निवेश का समर्थन करना चाहिए। पारिवारिक और सामाजिक संबंध हैं वृद्ध लोगों की स्वस्थ और उत्पादक आबादी को बढ़ावा देना और समाज में उनके योगदान को अधिकतम करना भी महत्वपूर्ण है।

रिपोर्ट के अनुसार, एशिया और प्रशांत क्षेत्र में 60 वर्ष से अधिक आयु के 40 प्रतिशत लोगों के पास किसी भी प्रकार की पेंशन तक पहुंच नहीं है, जिसमें महिलाएं असंगत रूप से प्रभावित होती हैं, क्योंकि वे अवैतनिक घरेलू काम करने की अधिक संभावना रखती हैं।

बार एसोसिएशन में एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए रखें आरक्षित, 2024-25 के चुनाव के लिए सुप्रीम कोर्ट ने दिया निर्देश

पीठ ने कहा कि पदाधिकारियों का एक पद रोटेशन के आधार पर महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा। इसने स्पष्ट किया कि शीर्ष अदालत द्वारा जारी निर्देश महिलाओं को एससीबीए के अन्य पदों पर चुनाव लड़ने से अयोग्य नहीं ठहराएंगे। इस तरह पदाधिकारियों का एक पद दो वरिष्ठ कार्यकारी सदस्यों और तीन कार्यकारी सदस्यों का पद अनिवार्य रूप से महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन (एससीबीए) को अपनी कार्यकारी समिति में महिलाओं के लिए कम से कम एक तिहाई पद आरक्षित करने का निर्देश दिया। जस्टिस सूर्यकांत और केवी विश्वनाथन की पीठ ने एससीबीए से यह भी कहा कि 2024-25 के चुनावों में कोषाध्यक्ष का पद महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा।

पीठ ने कहा कि पदाधिकारियों का एक पद रोटेशन के आधार पर महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा। इसने स्पष्ट किया कि शीर्ष अदालत द्वारा जारी निर्देश महिलाओं को एससीबीए के अन्य पदों पर चुनाव लड़ने से अयोग्य नहीं ठहराएंगे। इस तरह पदाधिकारियों का एक पद, दो वरिष्ठ कार्यकारी सदस्यों और तीन कार्यकारी सदस्यों का पद अनिवार्य रूप से महिलाओं के लिए आरक्षित किया जाएगा।

इससे पहले फरवरी में एससीबीए ने दिल्ली हाईकोर्ट को बताया था कि कार्यकारी सदस्यों के रूप में महिला अधिवक्ताओं के नामांकन पर चर्चा के लिए दो महीने के भीतर जनरल बाडी की बैठक बुलाई जाएगी।

जस्टिस सुधीर कुमार जैन की पीठ वकील योगमाया एमजी द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें एससीबीए के भीतर लैंगिक प्रतिनिधित्व के मुद्दे का समाधान करने के लिए बैठक बुलाने की मांग की गई थी।

याचिकाकर्ता ने एससीबीए से कार्यकारी समिति में महिला प्रतिनिधित्व की कमी से जुड़े मुद्दे का समाधान करने का अनुरोध किया था। इस सिलसिले में उन्होंने एससीबीए को एक प्रतिवेदन सौंपा था, जिस पर 270 सदस्यों के हस्ताक्षर थे।

अचानक हेलोकप्तर ढेंकानाल सहर में लैंड किया , लोगो की मन मे डर

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर् : ढेन्कानाल सहर में हेलीकॉप्टर अचानक खेत से उतर गया । यह कहां से आया और क्यों आया इसकी कोई जानकारी प्रशासन के पास नहीं है। हालांकि, पुलिस और चुनाव उड़नदस्ता मौके पर पहुंच चुका है और जांच जारी रखे हुए है ।जानकारी के मुताबिक आज सुबह ढेंकनाल के महिषा पाट पल्लीश्री इलाके में एक सफेद हेलीकॉप्टर उतरा है ।इस हेलीकॉप्टर पर ACE AIR SERVICE लिखा हुआ है. इस संबंध में हेलीकॉप्टर के पायलट से पूछने पर उन्होंने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी । चूंकि चुनाव नजदीक हैं, उम्मीद है कि वीआईपी स्टार प्रचारक के दौरे को देखते हुए हवाई यातायात सुरक्षा और सड़क जांच हो सकती है ।मीडिया पूछने से भी पायलट का कुछ बोला नहीं ।आम लोगो की मन में डर पैदा किया ।

राघव चड्ढा की जा सकती थी आंखों की रोशनी, यूके में हुई सर्जरी; आखिर किस बीमारी से जूझ रहे थे आप सांसद

परिवहन विशेष न्यूज

रेटिना डिटेचमेंट आंखों में होनेवाली एक गंभीर बीमारी है। अगर इसमें तत्काल सर्जरी नहीं की गई तो इससे आंखों की रोशनी तक जा सकती है। इस बीमारी में रेटिना में छोटे छेद होने लगते हैं और यह तेजी से बढ़ता जाता है। रेटिना आंखों के पीछे मौजूद नाजुक परत होता है। विट्रेक्टोमी सर्जरी के दौरान सर्जन विट्रियस को हटा देते हैं।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में सियासी हलचल काफी तेज है। एक तरफ सीएम अरविंद केजरीवाल तिहाड़ में बंद हैं तो वहीं उनकी पत्नी सुनीता केजरीवाल ने चुनाव प्रचार का जिम्मा अपने हाथ में थाम लिया है। दिल्ली के बाद उन्होंने गुजरात में पार्टी के उम्मीदवारों के लिए रोड शो किया। इसी बीच राजनीतिक गलियारों में एक चर्चा काफी गरम हैं कि आखिर पार्टी के सबसे दिग्गज और युवा नेता राघव चड्ढा कहां हैं?

दिल्ली के कैबिनेट मंत्री सौरभ भारद्वाज ने बताया कि वह आंख संबंधी बीमारी से जूझ रहे हैं और इसका इलाज कराने के लिए वह ब्रिटेन में हैं। उन्होंने बताया था कि चड्ढा काफी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे। यह बीमारी इतनी गंभीर थी कि उनकी आंखों की रोशनी तक जा सकती थी। इस कारण वह इन दिनों राजनीति में सक्रिय नहीं हैं। हालांकि उन्होंने चड्ढा के जल्द ठीक होने और चुनावी अभियान में शामिल होने की बात कही।

न्यूज एजेंसी पीटीआई ने आप सूत्रों के हवाले से बताया कि राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा को 'रेटिना डिटेचमेंट' नामक बीमारी थी, जो आंखों से संबंधित है। इसके लिए उन्होंने 'विट्रेक्टोमी आई सर्जरी' कराई है। वह इसी सिलसिले में ब्रिटेन में हैं।

आखिर क्या है 'रेटिना डिचेटमेंट'

'रेटिना डिटेचमेंट' आंखों में होनेवाली एक गंभीर बीमारी है। अगर इसमें तत्काल सर्जरी नहीं की गई तो इससे आंखों की रोशनी जा सकती है।

इस बीमारी में रेटिना में छोटे छेद होने लगते हैं और यह तेजी से बढ़ता जाता है। रेटिना आंखों के पीछे मौजूद नाजुक परत होता है।

अगर समय रहते विट्रेक्टोमी सर्जरी नहीं कराई गई तो इससे इंसान अंधा तक हो सकता है। विट्रेक्टोमी सर्जरी के दौरान सर्जन विट्रियस को हटा देते हैं। विट्रियस एक जेल की तरह होता है जो आंखों और रेटिना के बीच के गैप को भरता है।

शार्प साइट आई अस्पताल के वरिष्ठ रेटिना एक्सपर्ट डॉ. सिद्धार्थ सैन से बातचीत में हमने विट्रेक्टॉमी के बारे में डिटेल से जानने की कोशिश की।

विट्रेक्टॉमी: यह क्या है, इसके लक्षण और कितना खतरनाक है?

विट्रेक्टॉमी, एक सर्जिकल प्रक्रिया है जिसमें आंख के अंदर मौजूद जेली जैसे पदार्थ, जिसे विट्रियस कहते हैं, को हटाया जाता है। यह सर्जरी विभिन्न कारणों से की जाती है, जैसे रेटिना में समस्या, आँख के पीछे रक्तस्त्राव, या अन्य आंख की बीमारियों के इलाज के लिए। आइए, विट्रेक्टॉमी के बारे में विस्तार से जानते हैं।

विट्रेक्टॉमी की आवश्यकता कब होती है?

विट्रेक्टॉमी की आवश्यकता विभिन्न मामलों में होती है। इनमें से कुछ प्रमुख कारण हैं:

1. रेटिना डिटैचमेंट: अगर रेटिना अपनी जगह से हट जाती है या उसमें छेद हो जाता है, तो इसके कारण आंख की दृष्टि पर प्रभाव पड़ सकता है। इसे ठीक करने के लिए विट्रेक्टॉमी की आवश्यकता होती है।

2. विट्रियस हेमरेज: आँख के अंदर रक्तस्त्राव होने से विट्रियस में खून जमा हो सकता है, जिससे दृष्टि में धुंधलापन आ सकता है। इस स्थिति में, रक्त को हटाने के लिए विट्रेक्टॉमी की आवश्यकता हो सकती है।

3. मैकुलर होलः यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें रेटिना के केंद्र में एक छेद बन जाता है। यह दृष्टि को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है और इसे ठीक करने के लिए विट्रेक्टॉमी का सहारा लिया जाता है।

विट्रेक्टॉमी के संभावित खतरें

विट्रेक्टॉमी, हालांकि दृष्टि में सुधार लाने के लिए की जाती है, लेकिन इसके भी कुछ संभावित खतरें हैं:

1. संक्रमण का खतराः किसी भी सर्जरी की तरह, विट्रेक्टॉमी में भी संक्रमण का खतरा होता है, खासकर आंख में। इसका इलाज करने के लिए डॉक्टरों को एंटीबायोटिक्स का सहारा लेना पड़ सकता है।

2. दृष्टि में बदलावः विट्रेक्टॉमी के बाद कुछ मरीज़ों की दृष्टि में अस्थायी या स्थायी धुंधलापन हो सकता है। इसके अलावा, कुछ मामलों में दृष्टि का ह्रास भी हो सकता है।

3. रेटिना का पुनः डिटैचमेंटः अगर सर्जरी के बाद भी रेटिना पुनः अपनी जगह से हट जाती है, तो यह और भी गंभीर समस्या पैदा कर सकती है।

उपचार के बाद की देखभाल

विट्रेक्टॉमी के बाद, मरीजों को आँखों की देखभाल पर विशेष ध्यान देना चाहिए। डॉक्टर की सलाह के अनुसार, आंखों पर दबाव डालने वाली गतिविधियों से बचें और नियमित रूप से चेक-अप करवाएं।

विट्रेक्टॉमी एक महत्वपूर्ण सर्जरी है, जो आंख की कई बीमारियों के इलाज में मदद करती है। हालांकि, यह अपने साथ कुछ खतरें भी लाती है, जिनसे बचने के लिए उचित देखभाल और डॉक्टर की सलाह का पालन करना महत्वपूर्ण है।

लोकसभा चुनाव 2024 और उत्तर प्रदेश की राजनीति

श्रीराम मंदिर, श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर, श्री कृष्ण जन्मभूमि, तीन तलाक, समान नागरिक संहिता, सुद्रढ़ कानून व्यवस्था, भारतीय संस्कृति का पुनुरुथान, दिखावे और मुफ्त की राजनीति पर अंकुश आदि मुद्दों पर बीजेपी के रुख को स्पष्ट करने में मोदी के बाद योगी जी का कोई जबाब नहीं है। सनातन संस्कृति के प्रतीक श्री राम चंद्र की जन्मभूमि अयोध्या वाले उत्तर प्रदेश से ही देश की राजनीति की दिशा तय होती आई है और इस बार भी होगी। साथ ही भविष्य में होने वाले बदलावों का भी रुख ज्ञात होगा। इसका कारण सिर्फ देश में सबसे अधिक लोकसभा सीटों का प्रदेश होना नहीं है, वरन देश की राजनीति में काबिज भारतीय जनता पार्टी के मुख्य मुद्दों का उत्तर प्रदेश से आत्मीय संबंध का भी होना है। जिस कांग्रेस काल की असफलताओं और नाउम्मीदी के कारण बीजेपी को 2014 से लगातार बहुमत हासिल होता आया है, उस कांग्रेस के अधिकतर शीर्ष नेता और सरकार प्रमुख, उत्तर प्रदेश से ही आयें हैं। विपक्ष के मुख्य चेहरे के दावेदार राहुल गाँधी भी संभवतः पुनः उत्तर प्रदेश से किस्मत अजमाने की ठान चुकें हैं। आज प्रदेश की 66 सीटों पर काबिज एनडीए गठबंधन पुनः 75 से अधिक सीटों पर विजय प्राप्त करने जा रहा हैं। योगी जी उस परंपरा के अनुयायी हैं, जिसे सनातन संस्कृति और भारतीयता का मुकुट मानने वाली बीजेपी, अपनी स्थापना के साथ ही अपना लक्ष्य मान कर, हासिल करने में लगी हुई है। भारतीय संस्कृति के सनातन रूप की रक्षा का बेड़ा गोरक्षनाथ मठ ने 1800 ई. के भी पहले से उठाये हुए है। मठ के उतराधिकारी योगी आदित्यनाथ का उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में यह दूसरा कार्यकाल अधिक सफल हुआ है। नरेंद्र मोदी की व्यक्तिगत छवि से नाराज और निराश हो रहे भाजपाई और अन्य दलीय लोग भी योगी जी में उनका विकल्प तलाशने लगे हैं। स्वच्छ और साफ राजनीति की छवि वाले योगी जी को भविष्य में बीजेपी का मुख्य चेहरा बनना तय है, क्योंकि बीजेपी को उनसे अच्छा नेतृत्व कोई नहीं दिखता जो सिर्फ उनके लक्ष्य के लिए राजनीति को साध सके। निःसंदेह नरेंद्र मोदी पुनः बहुमत पाने जा रहे हैं, पर उत्तर प्रदेश, देश की राजनीति में दीर्घकालिक प्रभाव की छाप भी छोड़ने को तैयार है।

लोकतंत्र और भारतीय राजनीति दुनिया के तमाम लोकतांत्रिक देशों की राजनीति से बहुत ही अलग किस्म की राजनीति वाला देश अपना भारत है। उसमें भी उत्तर प्रदेश की राजनीति के असली रुख को समझना सदा से उम्दा से उम्दा राजनीतिक पंडितों के लिए कठिन रहा है। लेकिन उत्तर प्रदेश की राजनीति ने अब तक देश की राजनीति को दशा और दिशा देती रही है। भारत की लोकतांत्रिक राजनीति में सत्ताधारी दल होने के नुकसान का होना एक सच्चाई है, जिससे बीजेपी भी बच नहीं सकती है। जैसा कि 2017 की विधान सभा के लिए हुए चुनावों में बीजेपी ने 312 सीटें जीती थी और 2022 के विधान सभा चुनावों में घटकर 255 सीटों पर आ गई थी, किंतु लोक सभा चुनावों में स्थिति अलग रहती है। इसीलिए इस बार के चुनावों में बीजेपी के लिए सत्ताधारी दल होने के नुकसान की भरपाई उत्तर प्रदेश में योगी जी की छवि से हो जाएगी, साथ ही बीजेपी के चुनावी रणनीतिकारों के कौशल पर भी संदेह के कोई कारण नहीं दिख रहे हैं। यद्यपि इस चुनाव में सबसे अधिक नुकसान एक खास लॉबी को होने वाला है। जिस प्रकार से भाजपा की अंदरूनी राजनीति में एक लॉबी देश के अन्य बीजेपी नेताओं की बढती लोकप्रियता को दबाने की कोशिश करती जा रही है और योगी जी की बढ़ती शक्ति के सन्मुख असहाय दिखती है, उससे यही संकेत मिल रहे हैं। यही कारण है कि एक दुसरे के धुर विरोधी दल और राजनेता एक साथ गठबंधन में आ चुके हैं। किंतु देश की आम जनता इनके कारनामों से परिचित और होशियार हो चुकी है। हालांकि ऐसे समय में नुकसान मात्र अवसरवादी गुटों का होने वाला है, फिर वह चाहे सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के, तो जाहिर है सत्ता की मलाई को कोई अकेले नहीं खा सकता है। चूँकि इस लॉबी का चरित्र एक सा अंग्रेजियत परस्त है, इसीलिए सनातन संस्कृति के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ योगी जी को ही इसका अधिक लाभ मिलने वाला है।

लोक सभा चुनाव और उत्तर प्रदेश जैसे-जैसे चुनावी प्रक्रिया आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे उत्तर प्रदेश राजनीति के आखाड़े में तब्दील होता जा रहा है। भाजपा का 'अबकी बार चार सौ पार' का सपना और विपक्ष का 'भाजपा भगाओ देश बचाओ' का दावा बिना उत्तर प्रदेश की जनता के साथ के असंभव है। श्रीराममंदिर निर्माण में बढ़ चढ़ कर भागीदारी करने वाली बीजेपी हिंदुत्व और सनातन संस्कृति को मुख्य मुद्दा बनाये हुए है, वहीं सनातन को खुल के गाली देने और चुनौती देने वालों को साथ रख कर तथा रामलला के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा में निमंत्रण को अस्वीकार कर देने वाले विपक्ष ने भी श्रीराम का आशीर्वाद लेकर चुनाव में जी जान लगाये हुए है। राहुल गाँधी अमेठी से और प्रियंका गाँधी रायबरेली सीट से चुनाव लड़ने की घोषणा नहीं कर रहे हैं। समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर कांग्रेस उत्तर प्रदेश की 17 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। इससे पूर्व 2019 के चुनाव में कांग्रेस यहाँ एक ही सीट जीत पाई थी। वहीं सपा मात्र 5 सीटों पर विजय हो पाई थी। जिसमें से 2 सीटें बीजेपी ने उपचुनाव में सपा से पुनः जीत गई थी। ऐसे में चुनावी नतीजे अधिक रोचक होने वाले हैं। वहीं बहुजन समाज पार्टी, बीजेपी के लिए कमजोर सीटों पर लड़ाई को त्रिकोणीय कर दे रही है। जैसा कि 2014 के लोक सभा चुनावों में लगभग 20% मत प्राप्त करके भी बसपा अपना खाता भी नहीं खोल पाई थी, वहीं बसपा ने सपा के साथ गठबंधन कर 2019 के लोक सभा चुनावों में 10 सीटें जीतीं और यह गठबंधन भी टूट गया था। आज बसपा अकेले चुनाव मैदान में हैं और रालोद बीजेपी के साथ है। उत्तर प्रदेश में लोक सभा चुनावों के सभी सातों चरणों में मतदान होगा। अभी तक दो चरणों में आठ-आठ करके कुल 16 सीटों पर मतदान हो चुका है और सभी उम्मीदवारों की किस्मत 4 जून का इंतजार कर रही है। बाकि सीटों पर क्रमशः तीसरे चरण में 10 सीटों पर 7 मई को (संभल, हाथरस, आगरा, फतेहपुर सिकरी, फिरोजाबाद, एटा, बदायूं, आंवला, बरेली), चौथे चरण में 13 सीटों पर 13 मई को (शाहजहांपुर(एससी), लखीमपुर खीरी, सीतापुर, धौरहरा, हरदोई, मिश्रिख, उन्नाव, फरुखाबाद, इटावा, कन्नौज, कानपूर, अकबरपुर, बहराइच), पांचवे चरण में 14 सीटों पर 20 मई को (मोहनलालगंज, लखनऊ, रायबरेली, अमेठी, जालौन, झाँसी, हमीरपुर, बाँदा, फतेहपुर, कौशाम्बी, बाराबंकी, फ़ैजाबाद, कैसरगंज, गोंडा), छठे चरण में 14 सीटों पर 25 मई को (सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, फूलपुर, इलाहाबाद, अम्बेडकरनगर, श्रावस्ती, डुमरियागंज, बस्ती, संत कबीरनगर, लालगंज(एससी), आजमगढ़, जौनपुर, मछलीशहर, भदोहीं) और सातवें चरण में 13 सीटों पर 1 जून को (महाराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर, देवरिया, बांसगांव(एससी), घोसी, सलेमपुर, बलिया, गाजीपुर, चंदौली, वाराणसी, मिर्जापुर, राबर्ट्सगंज(एससी) मतदान होने हैं। इनमें से अधिकतर सीटों पर बीजेपी को टक्कर नाममात्र की मिल रही है। पिछले विधान सभा चुनावों में बीजेपी का साथ छोड़ने वाले और सपा का साथ देने वाले पुनः बीजेपी के साथ आ चुकें हैं। ऐसे में अभी तक के रुझानों में बीजेपी अपने दावों पर खरा साबित हो रही है, बाकि अंतिम परिणामों के लिए बस इतना ही 'होइहे सोई जो राम रची राखा'।

उत्तर प्रदेश में विधान सभा और लोक सभा चुनाव

हिंदी पट्टी के राज्यों में लोक सभा और विधान सभा चुनावों में मतदाताओं का रुख अक्सर भिन्न भिन्न रहता है। उत्तर प्रदेश की जनता 2012 में सपा को राज्य की सत्ता और 2014 में भाजपा को केंद्र की सत्ता सौपती है। पुनः 2017 के विधानसभा चुनावों में बीजेपी को राज्य की सत्ता सौंपने के साथ 2019 के लोक सभा चुनावों में बीजेपी की सीटें कम कर देती है, जिसका कारण सपा और बसपा के परंपरागत मतदाताओं का मिल जाना था। वहीं 2022 के विधान सभा चुनावों में बीजेपी की सीटों में कटौती करते हुए सत्ता तो सौपती है किंतु सपा और रालोद के मिलने से, सपा को 55 से 111 सीटें देती है। 2017 में सत्ताधारी पार्टी होते हुए समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के साथ मिलकर मात्र 54 सीटें ही प्राप्त कर पाई थीं। बाद में 2022 के विधानसभा चुनावों में समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस से परहेज किया था और प्रदर्शन अच्छा किया था। अब पुनः सपा और कांग्रेस साथ आयें हैं, ऐसे में चुनावी नतीजों पर कोई खास असर होते हुए नहीं दिख रहा है, क्योंकि उत्तर प्रदेश के अधिकांश मतदाता परंपरा से हट कर मतदान से परहेज करते हैं। अक्सर नतीजे चुनावी रणनीति के कारण बदलते हैं। ऐसे में 2022 के विधान सभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के साथ रही रालोद और सुभासपा भी साथ छोड़कर एनडीए के साथ आ चुकीं हैं। मोदी और योगी की जोड़ी का जादू बरकरार है। परिवर्तन की लहर 'मतदान प्रतिशत के घटने के साथ' कमजोर हो चुकी है। तब यह सुनिश्चित दिख रहा है कि बढ़त तो बीजेपी को ही मिल रही है। इस बार के लोक सभा चुनावों के साथ ही उत्तर प्रदेश की चार विधान सभाओं में उपचुनाव भी साथ ही साथ होने जा रहे हैं। चौथे चरण में शाहजहांपुर की ददरौल सीट पर 13 मई को, पांचवे चरण में लखनऊ की लखनऊ पूर्व सीट पर 20 मई को, छठे चरण में बलरामपुर की गैसेंडी सीट पर 25 मई को, सातवें चरण में सोनभद्र की दुद्धी सीट पर 1 जून को मतदान होंगे। इसका असर लोक सभा के चुनावों में बीजेपी को बढ़त पाने में दिखेगा।

निष्कर्ष :- अंत में यही कहना ठीक होगा कि जब आज के दौर में राजनीति का मतलब ठगना और छलना ही बन गया है तो ऐसे में उत्तर प्रदेश सहित हिंदी पट्टी के राज्यों में मतदाता किसी अन्य दल द्वारा ठगे और छले जाने से अच्छा बीजेपी को चुनना पसंद करेगें। वैसे भी यह समाज 'अच्छे दुल्हे के साथ भूत प्रेतों वाली बारात' का दिल से स्वागत करने वाली है। इसीलिए एक बार फिर बीजेपी मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र की सत्ता को सँभालने जा रही है। साथ ही उत्तर प्रदेश के मतदाता बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व के लिए योगी जी की दावेदारी को सुनिश्चित करने जा रहे हैं।

'गैर जमानती वारंट नियमित रूप से नहीं किया जा सकता जारी', सुप्रीम कोर्ट ने जघन्य अपराध पर क्या कहा?

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि गैर जमानती वारंट तबतक नियमित तरीके से जारी नहीं किया जा सकताजब तक कि आरोपित पर जघन्य अपराध का आरोप न हो और उसके द्वारा कानूनी प्रक्रिया से बचने या सबूतों से छेड़छाड़/नष्ट करने की आशंका न हो।जस्टिस संजीव खन्ना और एसवीएन भट्टी की पीठ ने अपने हालिया फैसले में कहा कि गैर जमानती वारंट जारी करने के लिए कोई व्यापक दिशा-निर्देश नहीं है।

नईदिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि गैर जमानती वारंट तब तक नियमित तरीके से जारी नहीं किया जा सकता, जब तक कि आरोपित पर जघन्य अपराध का आरोप न हो और उसके द्वारा कानूनी प्रक्रिया से बचने या सबूतों से छेड़छाड़/नष्ट करने की आशंका न हो।

पीठ ने क्या कहा?

जस्टिस संजीव खन्ना और एसवीएन भट्टी की पीठ ने अपने हालिया फैसले में कहा कि गैर जमानती वारंट जारी करने के लिए कोई व्यापक दिशा-निर्देश नहीं है। लेकिन, शीर्ष अदालत ने कई मौकों पर कहा है कि गैरजमानती वारंट तब तक जारी नहीं किया जाना चाहिए, जब तक कि आरोपित पर जघन्य अपराध का आरोप न लगाया गया हो।

यह कानून का स्थापित सिद्धांत है: कोर्ट

पीठ ने कहा कि यह कानून का स्थापित सिद्धांत है कि गैर जमानती वारंट नियमित तरीके से जारी नहीं किया जा सकता है। किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता में तब तक कटौती नहीं की जा सकती, जब तक कि जनता और राज्य के व्यापक हित के लिए ऐसा करना आवश्यक न हो। 2021 में लखनऊ के विशेष मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट ने मैनेजर सिंह के खिलाफ यह कहते हुए गैरजमानती वारंट जारी किया कि जमानत प्राप्त करने से पहले व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने का कोई प्रविधान नहीं है।

एक अन्य आदेश में उन्होंने कहा कि चूंकि आरोपित जमानती वारंट जारी होने के बावजूद अनुपस्थित रहा, इसलिए उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए गैरजमानती वारंट जारी किया जा रहा है। इस पर शीर्ष अदालत ने कहा कि यह कहना कि जमानत प्राप्त करने से पहले व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने का कोई प्रविधान नहीं है, सही नहीं है। (दंड प्रक्रिया) संहिता के तहत व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने की शक्ति को प्रतिबंधात्मक तरीके से नहीं पढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि यह केवल आरोपित को जमानत मिलने के बाद ही लागू होती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023